

अध्याय — 1 अपठित गद्यांश-बोध



स्मरणीय बिंदु

अपठित गद्यांश का अर्थ—अ + पठित अर्थात् बिना पढ़ा हुआ गद्यांश। जो गद्यांश पहले कभी न पढ़ा गया हो, उसे अपठित गद्यांश कहते हैं। इस प्रकार के गद्यांश प्रश्न पत्र में देने का उद्देश्य छात्रों की बौद्धिक क्षमता, भाषा की पकड़ आदि का पता लगाना है। इसके अतिरिक्त परीक्षार्थी के सामान्य ज्ञान और स्वतंत्र अध्ययन का भी पता चलता है। परीक्षा में इसी प्रकार का गद्यांश देकर उस पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। इसे हल करते समय विद्यार्थियों को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना अति आवश्यक है—

- ▶ सर्वप्रथम गद्यांश को दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए। ऐसा करने से गद्यांश का मूल भाव समझ में आ जाएगा।
- ▶ फिर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर गद्यांश में रेखांकित करें।
- ▶ प्रश्नों के उत्तर केवल गद्यांश पर ही आधारित हों।
- ▶ सभी विकल्पों को ध्यानपूर्वक पढ़कर ही उचित विकल्प का चयन करें।
- ▶ प्रश्नों के उत्तर देते समय मूल प्रश्न ध्यान में रखना चाहिए।
- ▶ प्रश्नों के उत्तर लिखते समय सरल एवं मौलिक भाषा का ही प्रयोग करें, न कि गद्यांश को उतारें।
- ▶ गद्यांश शीर्षक अत्यन्त सार्थक एवं मूल-भाव पर केन्द्रित होना चाहिए।
- ▶ यदि गद्यांश में दिए गए शब्दों के अर्थ अथवा उनकी व्याख्या पूछी जाये तो प्रसंग के अनुसार ही उसका अर्थ एवं व्याख्या करनी चाहिए।
- ▶ जिन प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल पाये हों, उन पर ध्यान केन्द्रित कर अवतरण को फिर से पूर्ण एकाग्रचित होकर पढ़ें, उत्तर अवश्य मिल जायेंगे क्योंकि सभी प्रश्नों के उत्तर गद्यांश के अन्तर्गत ही होते हैं।

नोट—विगत वर्षों के प्रश्नों को नए पाठ्यक्रम (2023-24) के अनुसार संशोधित कर दिया गया है।

अध्याय — 2 अपठित काव्यांश-बोध



स्मरणीय बिंदु

अपठित का अर्थ है—अ + पठित अर्थात् बिना पढ़ा हुआ। जो काव्यांश पहले कभी न पढ़ा गया हो, उसे अपठित काव्यांश कहते हैं। अपठित काव्यांश प्रश्न-पत्र में सम्मिलित करने का उद्देश्य छात्रों के बौद्धिक, भावात्मक पकड़ की जाँच करना है। परीक्षा में इसी प्रकार का काव्यांश देकर उस पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। इसे हल करते समय विद्यार्थियों को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना अत्यावश्यक है—

- ▶ सर्वप्रथम काव्यांश को दो से तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए। इससे काव्यांश का मूल भाव समझ में आ जाएगा।
- ▶ फिर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर काव्यांश में ही होते हैं। उन्हें समझकर रेखांकित करें।
- ▶ अस्पष्ट और सांकेतिक प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए काव्यांश के मूलभाव को आधार बनाएँ।
- ▶ सभी विकल्पों को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए।
- ▶ प्रश्नों के उत्तर केवल काव्यांश पर ही आधारित हों।
- ▶ सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का ही चयन करें।
- ▶ कभी-कभी बहुविकल्पीय प्रश्नों में दिए गए विकल्प आपस में बहुत मिलते-जुलते से प्रतीत होते हैं। ऐसी अवस्था में विकल्प के शब्दों के अर्थ-भार की ओर ध्यान देकर उचित विकल्प का चुनाव करें।
- ▶ काव्यांश में प्रयुक्त तद्भव, तत्सम, देशज शब्दों को सर्वप्रथम प्रसंगानुसार समझना आवश्यक है।

नोट—विगत वर्षों के प्रश्नों को नए पाठ्यक्रम (2023-24) के अनुसार संशोधित कर दिया गया है।

कार्यालयी हिन्दी और रचनात्मक लेखन

अध्याय – 3 'अभिव्यक्ति और माध्यम'



स्मरणीय बिंदु

पत्रकारिता के विविध आयाम

पत्रकारिता को विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के अतिरिक्त लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है। वर्तमान समय में पत्रकारिता का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हो गया है। अब पत्रकारिता का अर्थ है—पाठकों या दर्शकों के समक्ष सब कुछ रखना अर्थात् पाठकों या दर्शकों (दृश्य-श्रव्य माध्यम) को मनोरंजन, स्वास्थ्य, फिल्म, सौन्दर्य, फैशन, विज्ञान, खेलकूद, कला, संस्कृति आदि के विषय में जानकारी देना तथा पुरुषों एवं महिलाओं, युवक-युवतियों, बालकों, नई-पुरानी पीढ़ी एवं वर्तमान भविष्य के लिए ज्ञानवर्द्धक एवं उपयोगी सामग्री उपलब्ध कराना।

पत्रकारिता का क्षेत्र

पत्रकारिता का क्षेत्र व्यापक होने के साथ-साथ चुनौतीपूर्ण भी है। लोकतंत्र के तीनों स्तंभों की निगरानी करने के साथ-साथ उन्हें सचेत करना, जनहित के लिए संघर्ष करना, जनसामान्य का मार्गदर्शन करना, जनहित के कार्य करना आदि इसके दायित्व बन गए हैं।

आज पत्रकारिता एक नए तरह का मिशन है, उसका कोई विकल्प नहीं हो सकता। राष्ट्रीय संकट के समय वह राष्ट्र का सच्चाई से साथ देती है।

पत्रकारिता क्या है?

प्रत्येक व्यक्ति अपने आस-पास घटित होने वाली घटनाओं के बारे में जानने को उत्सुक रहता है। नवीनतम जानकारी रखना मनुष्य का स्वभाव है। मनुष्य में जिज्ञासा का भाव प्रबल होता है। जिज्ञासा समाचार एवं व्यापक अर्थ में पत्रकारिता का मूल तत्व है। पत्रकारिता का विकास इसी सहज जिज्ञासा को शांत करने की कोशिश के रूप में हुआ।

देश-दुनिया में घटने वाली घटनाओं को पत्रकार समाचार के रूप में परिवर्तित करके हम तक पहुँचाते हैं। पहले वे सूचनाओं का संकलन करते हैं, फिर उन्हें समाचारों के रूप में ढालकर हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। इस पूरी प्रक्रिया को ही 'पत्रकारिता' कहा जाता है।

पत्रकारिता के विविध आयाम

पत्रकारिता का सम्बन्ध मुख्य रूप से समाचारों से है, किन्तु इसके अन्य आयाम भी हैं। किसी विचार, टिप्पणी, संपादकीय, लेख, फोटो, कार्टून आदि से सम्बन्धित पत्र भी पत्रकारिता के अन्तर्गत ही आते हैं।

- * पत्रकारीय लेखन
- * संपादकीय लेखन
- * समाचार लेखन

पत्रकारीय लेखन

विभिन्न समाचारों से एक जैसी जानकारी की अपेक्षा नहीं की जा सकती। पाठक कुछ घटनाओं के मामलों में विभिन्न तथ्य एवं विवरण विस्तार से पढ़ना चाहता है, तो कुछ अन्य के सन्दर्भ में उसकी इच्छा केवल यह जानने की होती है कि घटना के पीछे वास्तव में तथ्य क्या है? इसकी पृष्ठभूमि क्या है? समय, विषय एवं घटना के अनुसार पत्रकारिता में लेखन के तरीके बदल जाते हैं।

यही बदलाव पत्रकारिता में कई नए आयाम जोड़ता है। समाचार के अतिरिक्त आलेख, टिप्पणी, संपादकीय, फीचर, कार्टून, रिपोर्ट, फोटो आदि पत्रकारिता के विशेष अंग हैं। समाचार जगत में इसका विशेष स्थान एवं महत्त्व है। इन सबके बिना भी समाचार-पत्र पूरा नहीं हो सकता।

संपादकीय लेखन

समाचार-पत्र या पत्रिका के संपादक के विचार को 'संपादकीय' के रूप में जाना जाता है। प्रत्येक समाचार-पत्र का संपादक प्रतिदिन किसी-न-किसी ज्वलंत विषय पर अपने विचार व्यक्त करता है। संपादकीय के माध्यम से संपादक के निजी विचारों को जानने के अतिरिक्त समाचार-पत्र की नीति, सोच एवं विचारधारा भी स्पष्ट होती है। इस लेख के लिए संपादक स्वयं उत्तरदायी होता है।

संपादकीय के अन्तर्गत किसी घटना पर प्रतिक्रिया, किसी विषय या मुद्दे पर उसके विचार, किसी आन्दोलन या विचारधारा के प्रति प्रेरण

II, किसी जटिल स्थिति का विश्लेषण एवं सुझाव, आदि शामिल किए जाते हैं।

एक उच्चस्तरीय संपादकीय में निम्नलिखित गुणों का समावेश अपेक्षित है—

- ▶ संपादकीय लेख की शैली प्रभावशाली एवं सजीव होनी चाहिए। संपादकीय की भाषा स्पष्ट, सशक्त एवं प्रखर होनी चाहिए।
- ▶ लेखन में हास्य-व्यंग्य का पुट होने पर लेख अपेक्षाकृत अधिक आकर्षक हो जाता है।
- ▶ संपादक की दृष्टि एवं विचार बिल्कुल स्पष्ट, निर्भीक एवं दृढ़ होने चाहिए।

हर बात को उचित ठहराना, लचीला रूख, ढीली-ढाली शैली अंततः किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचना आदि संपादकीय लेखन के दोष माने जाते हैं, जिनसे बचने की आवश्यकता है।

समाचार लेखन

समाचार लेखन एक विशिष्ट कला है। श्रेष्ठ समाचार वही है, जो सूचनात्मक हो और उसमें तथ्यों को इस प्रकार संकलित किया गया हो कि पाठक या दर्शक-श्रोता घटित घटना का विवरण सही परिप्रेक्ष्य में समझ सकें। संवाददाता में संवेदनशीलता, कल्पनाशीलता, भाव-प्रवणता, रचनात्मकता एवं वाग्वैदग्धता जैसे गुणों का होना अनिवार्य है।

समाचार लेखन के आवश्यक तथ्य—समाचार लेखन हेतु निम्न आवश्यक तथ्यों का ध्यान रखा जाना अनिवार्य है—

- (i) समाचार लिखने से पूर्व उसकी पृष्ठभूमि का ज्ञान आवश्यक है।
- (ii) समाचार प्राप्त होने के बाद उससे सम्बन्धित अनेक पक्षों एवं तथ्यों को समाहित कर समग्रता के साथ लिखना अपेक्षित है। समाचार लेखन में चार 'सकारों' का ध्यान रखना अपेक्षित है।
 - (क) सत्यता—समाचार सच्चाई पर आधारित होना चाहिए।
 - (ख) स्पष्टता—समाचार अपने अर्थ को सरलता से समझा सके।
 - (ग) संक्षिप्तता—समाचार को अति विस्तार से नहीं लिखना चाहिए।
 - (घ) सुरुचि—समाचार की भाषा-शैली एवं प्रस्तुति रोचक होनी चाहिए।
- (iii) समाचार अनुच्छेदों में विभाजित होना चाहिए।
- (iv) अनुच्छेद न तो अधिक बड़े और न ही अति संक्षिप्त या लघु होने चाहिए।
- (v) एक अनुच्छेद में यथा सम्भव एक ही आयाम या पक्ष होना चाहिए।
- (vi) समाचार में शब्दों की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए।
- (vii) समाचार लेखन में शब्दों का निरर्थक प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- (viii) समाचार की भाषा में सामासिकता का गुण विद्यमान होना चाहिए।

समाचार लेखन के प्रकार

समाचार लेखन के दो प्रकार होते हैं—

1. **स्तूपी**—इस पद्धति में कम महत्वपूर्ण समाचारों को पहले तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण समाचार को अंत में लिखा जाता है। यह स्वरूप अधिक लोकप्रिय नहीं है।

2. **विलोम स्तूपी**—समाचार लेखन में पहले महत्वपूर्ण तथ्यों को लिखा जाता है और उसके बाद घटते महत्व एवं प्रासंगिकता के अनुसार अन्य तथ्यों को लिखा जाता है। इसमें प्रथम अनुच्छेद में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बातें तथा अन्तिम अनुच्छेद में कम महत्व के तथ्यों को लिखा जाता है। यह पद्धति समाचार लेखन में अत्यधिक लोकप्रिय है।

इसका प्रमुख दोष यह है कि यह घटना को निश्चित क्रम में प्रस्तुत नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त इसमें पुनरावृत्ति होने की सम्भावना हमेशा बनी रहती है।

समाचार के प्रकार

मुख्य रूप से समाचार चार प्रकार के होते हैं—

1. राष्ट्रीय, 2. अन्तर्राष्ट्रीय, 3. प्रादेशिक, 4. स्थानीय।

समाचार लेखन के विभिन्न चरण

1. **शीर्षक**—समाचार लेखन करते हुए सर्वप्रथम समाचार को शीर्षक देना चाहिए। जिसमें मुख्य घटना का सांकेतिक उल्लेख होना चाहिए।

- ▶ शीर्षक संक्षिप्त, सरल, सार्थक एवं स्पष्ट होना चाहिए।

- ▶ शीर्षक में यदि नाम दिया जाना जरूरी हो, तो महत्वपूर्ण तथा विख्यात व्यक्ति का नाम दिया जाना चाहिए।
- ▶ शीर्षक समाचार का 'प्रवेश द्वार' माना जाता है। शीर्षक की उपयुक्तता समाचार के महत्व को बढ़ाती है।

2. स्रोत—शीर्षक के पश्चात् समाचार के स्रोत का उल्लेख करना चाहिए।

जैसे—* हमारे विशेष प्रतिनिधि द्वारा।

* व्यक्तिगत संवाददाता द्वारा।

- ▶ समाचार प्रदाता ऐजेंसियाँ। * समाचार ब्यूरो।

(स्रोत के अन्तर्गत स्थान और व्यक्ति दोनों का उल्लेख करने में सामान्यतः समाचार ज्यादा विश्वसनीय हो जाता है।)

3. आमूख—आमूख को 'मुखड़ा' यानी इन्ट्रो (Intro) या 'लीड' (Lead) भी कहा जाता है। यह समाचार का पहला अनुच्छेद होता है। आमूख में समाचार के सम्बन्ध में तीन प्रश्न क्या, कहाँ एवं कब (?) का परिचय दिया जाता है। कभी-कभी आमूख के अन्तर्गत कौन, क्यों तथा कैसे (?) जैसे प्रश्नों का उत्तर देना भी जरूरी हो जाता है।

- ▶ आमूख सारगर्भित, संक्षिप्त तथा ठोस होना चाहिए।
- ▶ समीक्षकों के अनुसार, आमूख 30-35 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
- ▶ आमूख में किन्तु, परन्तु, लेकिन जैसे शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। ये शब्द आमूख को अव्यवस्थित तथा अयथार्थपरक बना देते हैं।

4. बॉडी या कलेवर—'आमूख' या 'इंट्रो' के पश्चात् समाचार का शेष भाग समाचार का बॉडी या कलेवर कहलाता है।

5. संक्षेपण—अंत में सम्पूर्ण समाचार का संक्षिप्त सार दिया जाना चाहिए।

(अ) काव्य भाग आरोह भाग-2

अध्याय — 4 काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न



स्मरणीय बिंदु

- ▶ छात्रों को सर्वप्रथम काव्यांश का दो-तीन बार मौन वाचन करके, उसमें निहित भावों व संवेदनाओं को समझना चाहिए।
- ▶ काव्यांश के मूल प्रतिपाद्य को समझना चाहिए।
- ▶ प्रश्नों के उत्तर के लिए सर्वाधिक सही विकल्प का चयन करना चाहिए।

(1) हरिवंश राय बच्चन — 'आत्म परिचय', दिन जल्दी-जल्दी ढलता है

कवि-परिचय

जीवन परिचय—बच्चन जी का जन्म सन 1907 में इलाहाबाद में हुआ। सन् 1942-1952 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहे। उन्होंने छायावाद की लाक्षणिकता वक्रता के बजाय सीधी-सादी जीवन्त भाषा और संवेदनशीलता गेय शैली में अपनी बात कही। बच्चन का कवि रूप सबसे विख्यात है, पर उन्होंने कहानी, नाटक, डायरी आदि के साथ बेहतरनी आत्मकथा भी लिखी है।

प्रमुख रचनाएँ—मधुशाला, मधुबाला, एकांत संगीत, प्रवासी की डायरी आदि।

भाषा शैली—बच्चन जी ने सादी जीवन्त भाषा और गेय शैली को अपनी कविताओं का आधार बनाया है।

(i) 'आत्म-परिचय' कविता का सारांश

इस कविता में कवि ने अपना 'आत्म परिचय' देते हुए अपनी मान्यताओं को व्यक्त किया है। यद्यपि उसके जीवन में अनेक चिंताएँ व्याप्त हैं फिर भी वह जीवन में प्रेम की ऊर्जा की कोई चिंता नहीं करता। वह तो अपने मन में गीत गाता है। यह संसार अपूर्ण और अधूरा है, अतः उसने अपने मन-मुताबिक सपनों का संसार बनाया हुआ है। चाहे सुख हो या दुःख, कवि प्रत्येक स्थिति में मस्त रहता है। यौवन के उन्माद में वह किसी की यादों को साथ लेकर रहता है। कवि 'हरिवंश राय बच्चन कहते हैं कि वे निश्चित रूप से इस संसार से कुछ अलग हैं क्योंकि संसार के लोग जहाँ वैभव (धन-दौलत) जोड़ते हैं, वे वह उसी वैभव को टुकड़ते रहते हैं। उनके गीत वास्तव में उनके मन की पीड़ा को व्यक्त करते हैं। दुनिया वाले उसे कवि कहते हैं पर वह अपनी मादकता से उन्मुक्त बना दीवानों की तरह इधर-उधर डोलता रहता है।

स्मृति-अनुप्रयोग

- ▶ 'आत्मपरिचय' और 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता के रचयिता हरिवंश राय बच्चन जी हैं। इन कविताओं में कवि ने अपने जीवन जीने की शैली को व्यक्त किया है।
- ▶ इन कविताओं में कवि ने दुनिया में अपने द्वंद्वत्मक सम्बन्धों को उजागर किया है।
- ▶ सांसारिक लोग जीवन-सत्य जानने का प्रयास करते हैं परन्तु वे कभी सफल नहीं हुए। जीवन का सत्य आज तक कोई नहीं जान पाया है।
- ▶ बच्चन जी ने बताया है कि बेचैन यात्री अपनी राह में तेजी से चलता है और उसे ऐसा लगता है कि दिन अपनी स्वाभाविक गति से बहुत तेज चल रहा है।

(2) आलोक धन्वा—पतंग

कवि-परिचय

'पतंग' कविता के रचयिता कवि आलोक धन्वा का जन्म सन् 1948 ई., में मुंगेर (बिहार) में हुआ। बहुत छोटी अवस्था से ही इन्हें अपनी कविताओं से अपार लोकप्रियता मिली। हिन्दी के अनेक गम्भीर काव्य प्रेमियों को उनकी कविताएँ जुबानी याद रही हैं। व्यापक ख्याति व उनसे होने वाली अपेक्षाओं के दबाव में उन्होंने थोक के भाव, कभी लेखन नहीं किया। उनका एकमात्र काव्य संग्रह सन् 1998 में प्रकाशित हुआ। इसके अलावा वे देश में सांस्कृतिक व सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय रहे हैं। कई राष्ट्रीय संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों में उन्होंने अतिथि व्याख्याता के रूप में भागीदारी की है। उन्हें अपने उत्कृष्ट कार्यों के लिए कई सम्मान भी मिले।

पाठ्यपुस्तक में दी गई कविता 'पतंग' आलोक धन्वा के एकमात्र संग्रह का हिस्सा है। पतंग के बहाने कवि ने इस कविता में बालसुलभ इच्छाओं एवं उमंगों का सुन्दर चित्रण किया है।

पतंग कविता का सारांश

'पतंग' बाल सुलभ इच्छाओं और उमंगों से भरी कवि की एक लम्बी कविता का एक अंश है जिसमें यह बताया गया है कि पतंग बच्चों की उमंगों का सपना है। आकाश में उड़ती पतंगें बच्चों के मन को आकर्षित करती हैं तथा उन्हें ऊँचाइयों छूने को आकृष्ट करती हैं। बच्चा इन ऊँचाइयों के भी पार जाना चाहता है। पतंग उड़ाना हर बच्चे का सपना होता है। वे गिरकर उड़ते हैं, सँभलते हैं और फिर नई पतंग, नई उमंग के साथ मैदान में डटकर खड़े हो जाते हैं। उनकी यही जिजीविषा उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

वर्षा ऋतु बीत जाने के बाद शरद ऋतु आ गई है जो खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा लाई है। धूप ऐसी लगती है जैसे कोई बच्चा नई चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए इशारों से पतंग उड़ाते बच्चों को बुला रहा हो। बच्चों के लचीले शरीर पतंग के सहारे उड़ते से लगते हैं तथा पतंग के उड़ते ही तितलियों-सी चंचलता, सीटियाँ, किलकारियाँ शुरू हो जाती हैं।

कपास जैसे मुलायम बच्चे बेसुध होकर दौड़ते हैं। कटी पतंग को लूटने से छतों पर नरम कदमों से दौड़ते हैं और छतों के किनारे से गिरने से बचते हैं। वे एक धागे के सहारे दौड़ते हैं जैसे वे भी पतंग के साथ-साथ उड़ रहे हों।

यदि छत के खतरनाक किनारे से बच्चे गिरने से बच जाएँ तो वे निडर होकर सूर्य के सामने आने को भी तत्पर हो जाते हैं। पृथ्वी उनके बेचैन पैरों के पास तेजी से घूमती हुई आने लगती है। लगता है कि वे अपने बेचैन पैरों से सारी पृथ्वी को नाप लेना चाहते हैं।

स्मृति-अनुप्रयोग

- ▶ कवि ने 'पतंग' कविता में प्राकृतिक सौन्दर्य का अद्भुत चित्रण किया है।
- ▶ कवि का मन बालमन से मनोविज्ञान तक जा पहुँचा है।
- ▶ कवि ने भादों के अंधकार से शरद के उजाले की ओर चलने का संकेत दिया है अर्थात् निराशा के अंधकार का सामना करते हुए आशा के उजाले की तरफ कदम बढ़ाने चाहिए।

(3) कुँवर नारायण — 'कविता के बहाने,' 'बात सीधी थी पर'

कवि परिचय

जन्म— 19 सितम्बर, 1927 (उत्तर प्रदेश)

प्रमुख रचनाएँ— चक्रव्यूह (1956),

परिवेश— हम तुम, अपने सामने, कोई दूसरा नहीं, इन दिनों (काव्य संग्रह); आत्मजयी (प्रबंध काव्य); आकारों के आस-पास (कहानी संग्रह); आज और आज से पहले (समीक्षा); मेरे साक्षात्कार (सामान्य)।

प्रथम पुरस्कार— साहित्य अकादमी पुरस्कार, कुमार आशान पुरस्कार, व्यास सम्मान, प्रेमचंद पुरस्कार, लोहिया सम्मान, कबीर सम्मान, ज्ञानपीठ पुरस्कार।

(i) कविता के बहाने

कवि ने इस कविता में यह बताया है कि कविता का विषय क्षेत्र अति व्यापक है। चिड़िया की उड़ान, फूलों की मुस्कान और बच्चों की क्रीड़ा—कविता के विषय हैं, किंतु ये सब सीमित विषय हैं, जबकि कविता असीम है। कविता की उड़ान चिड़िया की उड़ान से कहीं अधिक ऊँची और विस्तृत है। कविता की सुगंध (प्रभाव) फूल से अधिक स्थायी है। फूल खिलकर मुरझा जाता है, परंतु कविता और उसकी सुगंध कभी मुरझाती (मिटती) नहीं है। कविता बच्चों के एक खेल के समान आनंदपूर्ण और भेदभाव से रहित होती है। कविता प्रकृति और मानव के समस्त क्रियाकलापों को अपने में समेटे हुए होती है फिर भी उससे कहीं अधिक व्यापक, कल्पनापूर्ण, प्रेरक और महान् होती है।

(ii) 'बात सीधी थी पर' कविता का सारांश

जो लाग बात को सीधी तरह से न कहकर जटिल ढंग से कहते हैं, उन पर कवि ने परोक्ष रूप से व्यंग्य किया है। घुमा-फिराकर बात कहने से उसकी जटिलता बढ़ती है तथा उलझी बात को सुलझाना बहुत कठिन होता है परिणामतः बात की प्रभावोत्पादकता ही समाप्त हो जाती है। इसी को कवि बात की चूड़ी मरना कहता है जैसे पेंच को अधिक कसते जाने पर उसकी चूड़ी मर जाती है और फिर कसावट ढीली पड़ जाती है उसी प्रकार बात रूपी पेंच की चूड़ी मर जाने पर उसमें कसावट नहीं आ पाती। बात रूपी पेंच की चूड़ी मर जाने पर उसका भाव मर जाता है और बात एक शरारती बच्चे के समान कवि से खिलवाड़ करने लगती है। कवि को उचित भाषा का प्रयोग करना चाहिए। यदि कवि सरल भाषा का प्रयोग करता तो बात इतनी नहीं उलझती।

स्मृति-अनुप्रयोग

- ▶ कवि कुंवर नारायण की कविता 'कविता के बहाने' में मनुष्य को प्रकृति से अधिक सुन्दर व समर्थ बताया गया है।
- ▶ 'बात सीधी थी पर' कविता में कविता के कथ्य और उसके माध्यम से द्वंद्व को उकेरकर, भाषा की सहजता पर बल दिया है।
- ▶ कवि ने कविता के कालजयी रूप को प्रदर्शित किया है और सरल बात कहने में भाव-अभिव्यक्ति व मूलकथ्य को महत्त्वपूर्ण माना है न कि सिद्धान्तों और सौन्दर्य को।

(4) रघुवीर सहाय — कैमरे में बंद अपाहिज

कवि परिचय

रघुवीर सहाय समकालीन हिन्दी कविता के संवेदनशील 'नागर' चेहरा है। उनका जन्म सन् 1929, लखनऊ (उत्तर प्रदेश में हुआ)। कवि रघुवीर सहाय ने घर-मुहल्ले के चरित्रों पर कविता लिखकर इन्हें हमारी चेतना का स्थायी नागरिक बनाया। वे पेशे से एक पत्रकार, सिद्ध कथाकार और कवि भी थे। कविता को उन्होंने एक कहानीपन और एक नाटकीय वैभव दिया। छंदानुशासन के साथ-साथ बातचीत की सहज शैली में उन्होंने बखूबी लिखा। उनकी कविताएँ मार्मिक उजास और व्यंग्य-बुझी, खुरदरी मुस्कानों से पटी पड़ी हैं। घटनाओं में निहित विडम्बना और त्रासदी को उन्होंने देखा व छोटे या लघु की महत्ता को स्वीकार किया। भारतीय समाज में ताकतवरों की बढ़ती हैसियत और सत्ता के खिलाफ भी साहित्य लिखा।

यहाँ प्रस्तुत कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' उनके संग्रह 'जो लोग भूल गये हैं' से ली गई है। अत्यन्त साधारण और अनायास सी प्रतीत होने वाली शैली में समाज की दारुण विडम्बनाएँ इनकी कविता में दिखाई देती हैं।

'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता का सारांश

इस कविता में कवि श्री रघुवीर सहाय ने मीडिया व समाज की संवेदनहीनता पर गहरा कटाक्ष किया है। एक मीडियाकर्मी अपने कार्यक्रम को आकर्षक एवं बिकाऊ बनाने के लिए विकलांग की दयनीयता को क्रूरता से उभारता है। उस अपाहिज से कैमरे के सामने ऐसे क्रूर प्रश्न पूछे जाते हैं, जो उसके दर्द को उभारते हैं और वह बेबसी से रोने लगता है। यह कविता वस्तुतः व्यवसायीकरण की दारुण विडम्बना को उभारती है। मीडियाकर्मी द्वारा संवेदनहीन होकर विकलांग व्यक्ति से बेटुके, बेकार और संवेदनहीन प्रश्न पूछे जाते हैं जो उसके दिल को राहत के स्थान पर ठेस पहुँचाते हैं। वह अपाहिज व्यक्ति पर ज़बरदस्ती रोने के लिए दबाव बनाता है जिससे उसकी पीड़ा उभरकर पर्दे पर आ जाए

और उसका कार्यक्रम सफल हो जाए। मीडियाकर्मी अपाहिज व्यक्ति के विकृत अंगों की बड़ी-बड़ी तस्वीरें स्क्रीन पर दिखाते हैं जिससे दर्शकों पर उसका मार्मिक प्रभाव पड़ सके और वे उसकी पीड़ा को समझ सकें। अर्थात् मीडियाकर्मी के केंद्र में दर्शक और उसके कार्यक्रम की सफलता है, वह विकलांग व्यक्ति नहीं जिसे वे दिखा रहे हैं। यह सारा नाटक शुद्ध व्यावसायिक लाभ के लिए किया जाता है। विकलांग के प्रति सहानुभूति या संवेदना का भाव उसमें लेशमात्र भी नहीं है।

स्मृति-अनुप्रयोग

- ▶ कविता में ऐसे व्यक्ति की तरफ इशारा किया गया है जो दुःख-दर्द व यातना-वेदना को बेचना चाहता है।
- ▶ कविता शारीरिक चुनौतियों को झेलने वाले लोगों के प्रति संवेदनशील होने को प्रेरित करती है।
- ▶ करुणा जगाने के मकसद से शुरू हुआ कार्यक्रम क्रूर बन जाता है—आधुनिक मीडिया का यह रूप लोगों में सिहरन पैदा करता है।

(5) शमशेर बहादुर सिंह — उषा

कवि परिचय

जन्म— शमशेर बहादुर सिंह का जन्म 13 जनवरी, सन् 1911 को देहरादून (उत्तर प्रदेश, अब उत्तराखंड में) हुआ।

विचारों के स्तर पर प्रगतिशील और शिल्प के स्तर पर प्रयोग धर्मी कवि शमशेर की पहचान एक बिंबधर्मी कवि के रूप में है। उनकी यह बिंबधर्मिता शब्दों से रंग, रेखा, स्वर और सूची की अद्भुत कशीदाकारी का भावादा रखती है। उनका चित्रकार मन कलाओं के बीच की दूरी को न केवल पाटता है बल्कि भाषातीत हो जाना चाहता है।

कथा और शिल्प दोनों ही स्तरों पर उनकी कविता का मिज़ाज अलग है। उर्दू शायरी के प्रभाव से संज्ञा और विशेषण से अधिक बल सर्वनामों, क्रियाओं, अव्ययों और मुहावरों को दिया है। इन्होंने खुद भी अच्छे शेर कहे हैं। शब्दों में बाँधने का अद्भुत प्रयास किया है। प्रस्तुत कविता 'उषा' भी इसी का उदाहरण है। इसमें सूर्योदय से ठीक पहले के पल-पल परिवर्तित प्रकृति का शब्दचित्र है।

'उषा' कविता का सारांश

इस कविता में कवि ने सूर्योदय के पूर्व उषाकाल में पल-पल होते आकाश के परिवर्तन को विभिन्न उपमानों के माध्यम से उभारा है। सुबह का आकाश शंख के समान कभी नीला तो कभी राख से लीपे हुए चौके की तरह गीला लगता है। सूर्य की आकाश में बिखरी लालिमा से आकाश ऐसा लगता है मानो किसी ने काली सिल को लाल केसर से धो दिया हो। उदित होता सूर्य स्लेट पर लाल खड़िया से बने निशान की तरह चमकता है तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे नील जल में कोई गोरी स्नान कर रही हो। सूर्योदय होने के साथ ही ये सब जादू टूटने लगते हैं।

स्मृति-अनुप्रयोग

- ▶ कविता 'उषा' प्रकृति की गति को शब्दों में बाँधने का अद्भुत प्रयास किया गया है।
- ▶ कवि ने स्वयं को भोर के आसमान का मूकदृष्टा नहीं बनने दिया बल्कि भोर की आसमानी गति को धरती के
- ▶ जीवन भरे हलचल से जोड़ने वाला सृष्टा बना है।
- ▶ कविता एक ऐसे दिन की शुरुआत है, जहाँ रंग है, गति है, भविष्य की उजास है और हर कालिमा को चीरकर आने का एहसास कराती 'उषा' है।

(6) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला — बादल राग

कवि परिचय

जन्म— सन् 1899, महिषादल, (बंगाल के मेहिनीपुर जिले के) पारिवारिक गाँव-गढ़ाकोला, (उन्नाव, उत्तर प्रदेश)

प्रमुख रचनाएँ—अनामिका, पवरिमल, गीतिका, बेला, नए पत्ते, अणिमा, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता (कविता संग्रह); चतुरी मचार, प्रभावती, बिल्लेसुर बकरिहा, चोटी की पकड़, काले कारनामे (गद्य); आठ खंडों में 'निराला रचनावली' प्रकाशित। समन्वय, मतवाला पत्रिका का संपादन।

निधन—सन् 1961, (इलाहाबाद में)

कविता को नया स्वर देने वाले निराला छायावाद के कवि हैं। उनकी कविता उल्लास-शोक, राग-विराग, उत्थान-पतन, अंधकार-प्रकाश का सजीव कोलाज है। वे छंद, रूढ़ियों आदि के बंधन को तोड़ते हुए, काव्य विषय और युग की सीमाओं को भी अतिक्रमित करते हैं। उनका निर्बंध और उदात्त काव्य-व्यक्तित्व कविता और जीवन में फर्क नहीं रखता।

निराला एक तरफ तत्सम सामाजिक पदावली और ध्वन्यात्मक बिम्बों से युक्त 'राम की शक्ति पूजा' और कठिन छंद साधना का प्रतिमान 'तुलसीदास' हैं तो दूसरी तरफ, देशी टटके शब्दों का सोंफापन लिए 'कुकुरमुत्ता', 'रानी ओर कानी', 'महँगू महँगा रहा' जैसी कविताएँ हैं।

निराला को वर्षा ऋतु अधिक आकर्षित करती है क्योंकि बादल के भीतर सृजन और ध्वंस की ताकत एक साथ समाहित है। बादल किसान के लिए उल्लास एवं निर्माण का तो मजदूर के संदर्भ में क्रांति एवं बदलाव का अग्रदूत है शायद इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर कवि ने 'बादल राग' कविता की रचना की हो।



सारांश

'बादल राग' कविता सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला जी' के काव्यसंग्रह 'अनामिका' में दी गई है। यह उनकी एक ओजपूर्ण कविता है। इस कविता में कवि बादल को क्रान्ति व विप्लान का प्रतीक मानकर उसका आह्वान करता है। किसान व जनसामान्य की आकांक्षाएँ-आशाएँ बादल को नव निर्माण के राग के रूप में पुकारती हैं। निराला बादल को क्रान्तिदूत मानते हैं। बादल शोषितों का जीवन दाता है और शोषकों अर्थात् पूँजीपतियों को भयभीत कर देते हैं। बादल की भयंकर गर्जना से धरती में सौँस अंकुर भी सतर्क हो जाते हैं और नए जीवन की उष्मा में नए अंकुर सिर उठाकर बादल को ताकते रहते हैं जैसे कि क्रान्ति की आशा बँध जाती है। बादल की वज्र के समान भयंकर गर्जना से संसार डरकर अपना दिल थाम लेता है। बिजली गिरने से ऊँचे पर्वत भी खंड-खंड हो जाते हैं या फिर जैसे बड़े-बड़े वीर रणक्षेत्र में वज्र के प्रहार से मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं, वैसे ही क्रान्ति के बिगुल से बड़े लोगों या पूँजीपतियों का विनाश होता है क्योंकि वे खिन्न व दलित, गरीब लोगों का शोषण करते हैं जबकि छोटे शक्तिहीन कमल के समान बच्चों, गरीबों और किसानों में क्रांति से नव जीवन का संचार होता है।

स्मृति-अनुप्रयोग

- ▶ निराला जी की कविता में संघर्ष और जीवन, क्रान्ति और निर्माण, ओज और माधुर्य, आशा और निराशा के द्वंद आदि सभी तरह के तत्त्व हैं।
- ▶ कविता एक ओर जीवन निर्माण के नए राग का सूचक

है तो दूसरी ओर उस भैरव संगीत का, जो नव-निर्माण का कारण बनता है।
▶ बादलों में हुई क्रान्ति के कारण धरती में सोए अंकुर नवजीवन की आशा में सिर ऊँचा करने का साहस जुटा पाए हैं।

(7) तुलसीदास — 'कवितावली', 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप'

कवि परिचय

जन्म-सन् 1532, बाँदा (उत्तर प्रदेश) ज़िले के राजापुर गाँव में माना जाता है।

प्रमुख रचनाएँ—रामचरितमानस, विनयपत्रिका, गीतावली, श्री कृष्ण गीतावली, दोहावली, कवितावली, रामाज्ञा प्रश्न निधन-सन् 1623, काशी में।

तुलसीदास जी सगुण काव्यधारा में रामभक्ति शाखा के सर्वोपरि कवि थे। उनकी भक्ति लोकोन्मुख थी। यह बात उनकी काव्य-संवेदना में प्रकट होती है। उन्होंने शास्त्रीय भाषा (संस्कृत) के स्थान पर लोकभाषा (ब्रज व अवधी) में साहित्य रचना की लेकिन शिल्पगत मर्यादा की दृष्टि से शास्त्र की ओर भी उनका झुकाव रहा। वे दार्शनिक तथा लौकिक स्तर के नाना द्वंदों के चित्रण और उनके समन्वय के कवि हैं। जीवन व जगत की व्यापक अनुभूति और मार्मिक प्रसंगों की इन्हें अचूक सूझ थी। यही विशेषता उन्हें महाकवि बनाती है। उनके द्वारा रचित 'रामचरितमानस' एक महाकाव्य बनकर उभरा। इस महाकाव्य को विश्व प्रसिद्ध लोकप्रियता मिली। इसमें 'सीता-राम' की कथा है पर इससे अधिक लोक-संवेदना और समाज की नैतिक बनावट के बारे में बात की गई है। उनके सीता-राम ईश्वर की अपेक्षा देश-काल के आदर्शों के अनुरूप मानवीय धरातल के चरित्र हैं। वे ग्रामीण व कृषक संस्कृति तथा रक्त संबंध की मर्यादा पर आदर्शीकृत गृहस्थ जीवन के चित्तरे कवि हैं। अपने समय में वे हिन्दी क्षेत्र में प्रचलित सारे भावात्मक व काव्यभाषायी तत्त्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनमें भाव-विचार, काव्य-रूप, छंद और काव्य भाषा की अद्वितीय बहुल समृद्धि देखने को मिलती है।



सारांश

(1) कवितावली (उत्तरकांड से) का सारांश

'कवितावली' तुलसीदास द्वारा लिखा गया महत्त्वपूर्ण काव्य-ग्रंथ है। जिसमें कवि ने कवित्त, सवैया छंदों का प्रयोग किया है। पाठ्य पुस्तक में कवि तुलसीदासजी के तीन छंद संकलित किए गए हैं। इन छंदों से तत्कालीन युग की विसंगतियों का पता चलता है। सभी लोग पेट की खातिर अच्छे-बुरे कर्म करते हैं, बेटे-बेटी तक को बेच देते हैं। पेट की आग बड़वाग्नि से भी बड़ी होती है जो राम की कृपा से ही शांत हो पाती है। युगीन विसंगतियों का चित्रण दूसरे छंद में भी है। किसान खेतविहीन हैं, भिखारी को भीख नहीं मिलती और नौकर को नौकरी प्राप्त नहीं होती। लोग रोज़गार से रहित हैं और एक-दूसरे से पूछते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें? इस दरिद्रता रूपी रावण ने पूरी दुनिया को ग्रस लिया है। इससे मुक्ति तभी मिलेगी जब राम कृपा करेंगे। तीसरे छंद में तुलसीदासजी ने स्वयं को राम का गुलाम मानते हुए यह चुनौती दी है कि आप लोग (सांसारिक व्यक्ति) मुझे जो भी कहना चाहें, कहें, मुझे किसी का डर नहीं और न ही बेटा-बेटी का ब्याह करना है जो संसार से भयभीत रहूँ। माँग कर खाना है और जहाँ अवसर मिले, पैर फँलाकर सो जाना है, किसी से कुछ लेना-देना नहीं है अतः मैंने राम का सेवक बनकर कोई गलत काम नहीं किया, दुनिया जो चाहे सो समझे।

(2) 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' का सारांश

यह प्रसंग तुलसीदासजी द्वारा रचित महाकाव्य 'रामचरितमानस' के लंकाकांड से लिया गया है। राम-रावण युद्ध के प्रसंग में श्री लक्ष्मण जी पर मेघनाथ द्वारा शक्ति बाण चलाये जाने के कारण वे मूर्च्छित हो गए। लंका से सुषेण वैद्य को लाया गया, जिसने बताया कि संजीवनी बूटी का रस पिलाने से लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर होगी। हनुमान जी संजीवनी बूटी (एक जड़ी-बूटी) लाने हेतु गए किंतु अर्धरात्रि बीतने पर भी जब वापस न आ सके तो राम अधीर होकर विलाप करने लगे की लक्ष्मण ने प्रत्येक कष्ट में उनकी सहायता की है। वे उनके बिना किस मुख से अयोध्या जाएँगे। जब माताएँ लक्ष्मण के बारे में पूछेंगी तो वे क्या उत्तर देंगे? जब राम इस प्रकार विलाप कर रहे थे, तभी हनुमान जी आ गए। उन्होंने संजीवनी बूटी वैद्य को दी और उसने उसका रस लक्ष्मण जी को पिलाया जिससे लक्ष्मण जी की मूर्च्छा दूर हो गई। लक्ष्मण जी के ठीक होने का समाचार सुनकर रावण सिर धुनने लगा और फिर कुंभकरण को जगाकर उसे सब बात बताई। कुंभकरण रावण को सीता का अपहरण करने के लिए रावण को बहुत धिक्कारता है और कहता है कि ऐसा बुरा काम करने के बाद उसे अच्छे फल की इच्छा त्याग देनी चाहिए। उसका यह कार्य घोर निंदनीय तथा राक्षस कुल का नाश करने वाला सिद्ध होगा।

स्मृति-अनुप्रयोग

- ▶ कविता में तत्कालीन हिन्दी क्षेत्र की दोनों काव्य-भाषाओं-अवधी व ब्रजभाषा को संस्कृति कथा-सीताराम को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया गया है।
- ▶ कविता से, समाज में व्याप्त जात-पाँत और धर्म के विभेदक दुराग्रहों के तिरस्कार का साहस पैदा होता है।
- ▶ भक्ति की रचनात्मक भूमिका है जो आज के भेदभाव मूलक सामाजिक-राजनीतिक माहौल में अधिक प्रासंगिक है।
- ▶ कविता में, ईश्वरीय राम का पूरी तरह से मानवीकरण कर दिया गया है जिससे पाठक का काव्य-मर्म से सीधा जुड़ाव हो जाता है।

(8) फ़िराक गोरखपुरी — रुबाइयाँ

कवि परिचय

मूल नाम : रघुपति सहाय 'फ़िराक'

जन्म : 28 अगस्त, 1986, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा : रामकृष्ण की कहानियों से शुरूवात, बाद की शिक्षा अरबी, फ़ारसी और अंग्रेजी में। 1917 में डिप्टी कलेक्टर के पद पर चयनित, पर स्वराज आन्दोलन के लिए 1918 में पद त्याग। 1920 में स्वाधीनता आन्दोलन में हिस्सेदारी के कारण डेढ़ वर्ष की जेल। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में अध्यापक रहे।

सम्मान : गुले-नग्मा के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार और सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड

महत्त्वपूर्ण कृतियाँ : गुले-नग्मा, बज़्मे ज़िंदगी : रगे-शायी, उर्दू गज़लगोई

निधन : सन् 1983

उर्दू शायरी में लोकजीवन व प्रकृति के पक्ष कुछ कम उभर कर आएँ हैं। फ़िराक गोरखपुरी ने इस रवायत को तोड़ा है। उन्होंने परंपरागत भाव-बोध और शब्द-भंडार का उपयोग करते हुए उसे नयी भाषा व नए विषयों से जोड़ा। उर्दू शायरी के लेखन में एक तरह का संवाद प्रमुख होता है। मीर व गालिब की तरह फ़िराक ने भी कहने की इस शैली को साधकर आम आदमी या साधारण-जन से अपनी बात कही है। उन्होंने प्रकृति, मौसम और भौतिक जगत के सौंदर्य को शायरी का विषय मानते हुए कहा कि दिव्यता भौतिकता से पृथक वस्तु नहीं है जिसे हम भौतिक कहते हैं वही दिव्य भी है।

फ़िराक की रूबाई में हिन्दी का एक घरेलू रूप दिखाई देता है। भाषा सहज है और वात्सल्य वर्णन सादगी से परिपूर्ण है और साथ ही हिन्दी, उर्दू और लोकभाषा के अनूठे गठबंधन का प्रयोग किया है। उनकी रूबाईयों से पता चलता है कि उस समय के कठिन दौर में त्योहारों पर बच्चों की नन्ही फ़रमाइशें पूरी की जाती थीं।



सारांश

'रूबाइयाँ' का सारांश

उर्दू के प्रसिद्ध शायर 'फ़िराक गोरखपुरी' ने यहाँ एक वात्सल्यपूर्ण चित्र प्रस्तुत किया है जिसमें एक माँ अपने शिशु को आँगन में खड़ी हाथों के झूले पर झुला रही है और बच्चा प्रसन्नता से किलकारी मार रहा है। माँ बच्चे को नहलाकर तैयार करती है, घुटनों में उसे दबाकर कपड़े पहनाती है और बच्चा माँ का मुँह निहारता है। दीवाली पर माँ चीनी के खिलौने लाती है, दीपक जलाती है तब उसके मुख पर गर्व और वात्सल्य की अनोखी चमक दिखती है। माँ बच्चे को शीशे में चाँद का प्रतिबिंब दिखाकर बहलाती है। रक्षाबंधन के दिन बहन, भाई की कलाई पर चमकते तारों वाली राखी के धागे बाँधकर प्रसन्न होती है।

स्मृति-अनुप्रयोग

- ▶ कविता में 'मुझे चाँद चाहिए, मैयारी, मैं चँद्र खिलौना लैहों, जैसी बिंब-योजना का प्रयोग किया गया है।
- ▶ लाक्षणिक प्रयोग व संवाद प्रमुख भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है।
- ▶ इंसान के हाथों इंसान पर जो गुज़रती है उसकी तलख सच्चाई और आने वाले कल के प्रति एक उम्मीद को भारतीय संस्कृति और लोकभाषा के प्रतीकों से जोड़कर शायरी की गई है।

(9) उमाशंकर जोशी — छोटा मेरा खेत; बगुलों के पंख

कवि परिचय

जन्म—सन् 1911, गुजरात में।

प्रमुख रचनाएँ— विश्व शांति, गंगोत्री, निशीथ, प्राचीना, आतिथ्य, वसंत वर्षा, महाप्रस्थान, अभिज्ञा (एकांकी), सापनाभारा, शहीद (कहानी); श्रावणी मेणो, विसामो (उपन्यास); पाकांजण्या (निबंध); गोष्ठी, उद्याड़ीबारी, क्लांतकवि, म्हारासॉनेट, स्वप्नप्रयाण (संपादन)

सन् 1947 से संस्कृति पत्रिका का संपादन।

निधन— सन् 1988

उमाशंकर जोशी ने बीसवीं सदी की गुजराती कविता और साहित्य को नयी भंगिमा और नया स्वर प्रदान किया। उन्हें परम्परा का गहरा ज्ञान था। उन्होंने कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' और भवभूति के 'उत्तररामचरित्र' का गुजराती में अनुवाद किया। बतौर कवि इन्होंने गुजराती कविता को प्रकृति से जोड़ा, उसे आम जिन्दगी के अनुभव से परिचित कराया और नयी शैली दी। जीवन के सामान्य प्रसंगों पर सामान्य बोलचाल की भाषा में कविता लिखी। साहित्य के साथ-साथ उनका दूसरी विधाओं में भी बहुमूल्य योगदान रहा। उन्होंने साहित्य की आलोचना की। निबन्धकार के रूप में गुजराती साहित्य में बेजोड़ रहे। आज़ादी की लड़ाई में जेल भी गए।

यहाँ प्रस्तुत कविता, 'छोटा मेरा खेत' में कवि को कागज़ का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह लगता है जिसमें भावनाओं की आँधी के प्रभाव से विचार और अभिव्यक्ति के रूप में बीज बोया जाता है जिससे शब्दों के अंकुर निकलकर, कविता का निर्माण होता है।

जोशी जी की कविता 'बगुलों के पंख' भी सुन्दर दृश्य की कविता है जो पाठक को सौन्दर्य के अपेक्षित प्रभाव से उस माया में फँसा देती है।



सारांश

'छोटा मेरा खेत'

इस कविता में कवि ने कविता और कृषि में समानता बताते हुए कहा है कि मेरा कागज का पन्ना चौकोर खेत की तरह है। भावों की आँधी से बीज को बोने से इसमें शब्द रूपी अंकुर फूटते हैं और उससे कविता की फसल तैयार होती है। यह कभी न समाप्त होने वाली फसल है अर्थात् सहृदय लोग सदैव इसका आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

'बगुलों के पंख'

कविता में कवि ने प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया है। संध्या समय आकाश में काले बादल छाए हैं

स्मृति-अनुप्रयोग

- ▶ कल्पना के सहारे से भावनाओं के बीज बोकर शब्दों के जो अंकुर निकलते हैं, वे एक कृति के रूप में पूर्ण स्वरूप प्राप्त कर पुष्पित-पल्लवित होते हैं।
- ▶ साहित्यिक कृति से जो अलौकिक रस-धारा फूटती है, वह उस क्षण में होने वाली रोपाई का ही परिणाम होता है।
- ▶ उत्तम साहित्य कालजयी होता है और असंख्य पाठकों द्वारा असंख्य बार पढ़ा जाता है।
- ▶ कविता में, आत्मगत और वस्तुगत के संयोग से मन पर पड़ने वाले प्रभाव के कारण पाठक कविता के मूल सौन्दर्य के काफी निकट पहुँच जाता है।
- ▶ कवि कजरारे बादलों में उड़ते बगुलों के दृश्य की माया में खो जाता है परन्तु वह इस माया से बचने की गुहार लगाता प्रतीत होता है।
- ▶ ऐसा आभास होता है कि कविता सौन्दर्य से बाँधने और बिँधने की चरम स्थिति व्यक्त करने का एक तरीका है।

(ब) गद्य भाग — आरोह भाग-2

अध्याय — 5 गद्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

(1) महादेवी वर्मा — भक्तिन

लेखिका परिचय

जन्म—सन् 1907, फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश)।

प्रमुख रचनाएँ—दीपशिखा, यामा (काव्य-संग्रह); शृंखला की कड़ियाँ, आपदा, संकल्पिता, भारतीय संस्कृति के स्वर (निबंध-संग्रह); अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, मेरा परिवार (संस्मरण/रेखाचित्र)।

प्रमुख पुरस्कार—ज्ञानपीठ पुरस्कार ('यामा' संग्रह के लिए 1983 ई. में), उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का भारत भारती पुरस्कार, पद्मभूषण (1956 ई.)

निधन—सन् 1987, इलाहाबाद

महादेवी वर्मा साहित्य सेवी और समाज सेवी के रूप में प्रतिष्ठित रही हैं। उन्होंने नारी समाज में शिक्षा और समाज-कल्याण के क्षेत्र में निरन्तर कार्य किया। साहित्य जगत में उनकी प्रतिष्ठा एक बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार के रूप में रही है। निबन्धों और संस्मरणात्मक रेखाचित्रों की वे एक अप्रतिम गद्यकार थीं। कविताओं में उन्होंने आन्तरिक वेदना व पीड़ा को व्यक्त किया है और गद्य में वह समाज से सरोकार रखती हैं। 'भक्तिन' महादेवी जी का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है 'जो स्मृति की रेखाएँ' में संकलित है। उन्होंने इसमें अपनी सेविका भक्तिन के अतीत और वर्तमान का परिचय दिया है। वह सेविका महादेवी जी के जीवन में आकर छा जाती है। भक्तिन का महादेवी के साथ आत्मीयता भरा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। महादेवी जी उसे अपने से अलग नहीं कर पातीं।

'भक्तिन'

'भक्तिन' महादेवी वर्मा जी का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है। इसमें उन्होंने अपनी सेविका 'भक्तिन' के अतीत और वर्तमान के संबंध में वर्णन करने के साथ ही उसके व्यक्तित्व के सभी पक्षों का स्वाभाविक रूप से वर्णन किया है।

भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था जो उसके पिता ने रखा था। माँ की मृत्यु के बाद आयी सौतेली माँ ने बचपन में ही लक्ष्मी (भक्तिन) का विवाह कर उसे ससुराल भेज दिया। एक-एक करके लगातार तीन बेटियों को जन्म देने के कारण सास और जिठानियों

ने उसकी उपेक्षा करना शुरू कर दिया। भक्तिन और उसकी छोटी-छोटी बेटियों को सारा काम करना पड़ता, वहीं जिठानियाँ बैठी रहती थीं। खाने में भी जिठानियों के काले-कलूटे लड़कों को दूध, मलाई, राब आदि मिलती जबकि उसकी लड़कियों को चने-बाजरे की घुघरी से काम चलाना पड़ता। भक्तिन के पिता की मृत्यु का समाचार भी विमाता ने बहुत देर से भेजा था। मायके पहुँचने पर विमाता के दुर्व्यवहार से दुःखी भक्तिन उल्टे पैर ससुराल लौट आई। उसने ससुराल आकर सास को खरी-खोटी सुनाई तथा पति के ऊपर गहने फेंककर अपनी व्यथा व्यक्त की। इस सब में भक्तिन के पति को अपनी पत्नी की कर्मठता पर विश्वास था इसलिए उसने ससुराल वालों से अलगगौझा कर अपना अलग घर बसा लिया। कठिन परिश्रम करने से घर में समृद्धि आ गई, लेकिन एक लड़की का विवाह करने के बाद ही पति का देहांत हो गया। सम्पत्ति के लालच में ससुराल वालों ने भक्तिन का पुनः विवाह कराना चाहा तो भक्तिन ने सिर मुँडवा कर स्पष्ट मना कर दिया। उसने दोनों बेटियों का विवाह कर बड़े दामाद को घर-जमाई बनाकर अपने पास रखा, लेकिन दुर्भाग्यवश कुछ ही समय में बेटी भी विधवा हो गई। तब जेठ के लड़के ने सम्पत्ति के लालच में अपने तीतरबाज साले से भक्तिन की बेटी के विवाह की योजना बनाई। लड़की के मना करने पर एक दिन तीतरबाज उसकी कोठरी में घुस गया और अंदर से दरवाजा बंद कर लिया। लड़की के पीटने पर भी उस तीतरबाज ने झूठ बोल दिया कि लड़की के बुलाने पर ही वह आया था। पंचायत ने लड़की की बात न मानकर दोनों को पति-पत्नी के रूप में रहने का आदेश दिया। पारिवारिक कलह इस कदर बढ़ी कि लगान चुकाना भी मुश्किल हो गया जिसके कारण ज़मींदार ने भक्तिन को दिन भर धूप में खड़ा रखा। अपमानित भक्तिन कमाने के उद्देश्य से शहर आ गई। जीवन के अंतिम परिच्छेद में भक्तिन लेखिका की सेविका के रूप में रहने लगी। नौकरी मिलने पर भक्तिन ने नहा-धोकर खाना बनाया। लेखिका को दाल के साथ मोटी काली चित्तीदार रोटियाँ परोसीं तथा साथ में अमचूरण, लाल मिर्च की चटनी या गाँव से लाए गुड़ खाने का प्रस्ताव रखा। लेखिका भक्तिन की सरलता से प्रभावित होकर अपनी असुविधाएँ छिपाने लगी। भक्तिन स्वयं में इंच मात्र बदलाव लाने के स्थान पर दूसरों को अपने अनुसार बदल लेती थी। उसके साथ रहकर लेखिका भी स्वयं को अधिक देहातिन महसूस करने लगीं। भक्तिन में दुर्गुणों का अभाव नहीं था। वह इधर-उधर पड़े पैसों को किसी मटकी में छिपाकर रख देती थी और लेखिका को खुश करने के लिए बात भी घुमा-फिरा कर कहती थी। इसके साथ ही वह अपनी बात को सही सिद्ध करने के लिए कई तर्क दिया करती थी।

भक्तिन सेवाभाव में हनुमान के समान थी। वह लेखिका की हर ज़रूरत का ध्यान रखती और सदैव साथ रहती थी। युद्ध के समय जब बेटी दामाद उसे साथ ले जाने आए तब भी वह लेखिका को छोड़कर जाने को तैयार नहीं हुई। भक्तिन सेवक के स्वामी से अलग होने की बात को सबसे बड़ा अन्याय मानती थी। लेखिका के द्वारा चले जाने की बात को भी वह हँसकर टाल देती थी। वह स्वयं को लेखिका की नौकर न मानकर अभिभाविका मानती थी। भक्तिन का अंतिम परिच्छेद जारी है और लेखिका भी इसे पूरा नहीं करना चाहती।

स्मृति-अनुप्रयोग

पहला प्रसंग—इस संस्मरण से समाज के शोषित-पीड़ित तबके में से आई स्त्री के संघर्षशील, स्वाभिमानी और कर्मठ जीवन की झलक मिलती है।

दूसरा प्रसंग—पितृसत्तात्मक—मान्यताओं और छल-हृदय से भरे समाज में एक स्त्री का अपने और अपनी बेटियों के हक की

लड़ाई लड़ना लेकिन हार जाना, उसकी अतिरिक्त पीड़ा व साहस का परिचायक है।

तृतीय प्रसंग—एक स्त्री द्वारा जिन्दगी की राह पूरी तरह बदल लेने का साहसिक निर्णय लेने का संवेदनशील चित्रण किया गया है।

(2) जैनेन्द्र कुमार — बाजार दर्शन

लेखक परिचय

जन्म—सन् 1905, अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

प्रमुख रचनाएँ—परख, अनाम स्वामी, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, जयवर्द्धन, मुक्तिबोध (उपन्यास); वातायन, एक रात, दो चिड़िया, फाँसी, नीलम देश की राजकन्या, पाजेब (कहानी-संग्रह); प्रस्तुत प्रश्न, जड़ की बात, पूर्वोदय, साहित्य की श्रेय और प्रेय, सोच-विचार, समय और हम (विचार-प्रधान निबंध-संग्रह)

प्रमुख पुरस्कार—साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारत-भारती सम्मान। भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से सम्मानित।

निधन—सन् 1990 में।

हिन्दी में प्रेमचंद के बाद सबसे महत्वपूर्ण कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित जैनेन्द्र कुमार का अवदान (योगदान) बहुत व्यापक और वैविध्यपूर्ण है। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से हिन्दी की एक सशक्त मनोवैज्ञानिक कथा-धारा का प्रवर्तन किया। कथाकार होने के साथ ही साथ जैनेन्द्र की पहचान एक अत्यन्त गम्भीर चिंतक के रूप में भी रही। उन्होंने बहुत सरल एवं औपचारिक-सी दिखनेवाली शैली में समाज, राजनीति, अर्थनीति एवं दर्शन से सम्बन्धित गहन प्रश्नों को सुलझाने की कोशिश की है। ये गांधीवादी चिंतन-दृष्टि रखते हैं।

‘बाज़ार दर्शन’

बाज़ार दर्शन पाठ में लेखक ने अनेक प्रकार के उदाहरणों के माध्यम से उपभोक्तावाद को स्पष्ट किया है। पाठ में लेखक ने तीन प्रकार के उपभोक्ताओं का वर्णन करते हुए लिखा है कि एक प्रकार के व्यक्ति वे होते हैं, जो जेब भरी व मन खाली होने पर बाज़ार से बहुत सारी चीज़ें खरीद लाते हैं जैसे कि उनके एक मित्र जो अपनी पत्नी के साथ बाज़ार से मामूली चीज़ें खरीदने जाते हैं लेकिन ढेर सारा सामान खरीद कर वापस लौटते हैं और इसके लिए अपनी पत्नी को ज़िम्मेदार बताते हैं। मित्र ने लेखक को बताया कि उस वक्त उनके पास जितने पैसे थे सब बाज़ार में खर्च हो गए।

इस प्रकार की खरीददारी का कारण लेखक बताते हैं कि बाज़ार में एक प्रकार का आकर्षण होता है जिसके जादू में फँसकर व्यक्ति खिंचा चला जाता है। वहाँ जाकर उसे महसूस होता है कि उसके पास कितना अभाव है और उस अभाव की पूर्ति करने की चाहत में उसका मन करता है कि सब कुछ खरीद लूँ। बाज़ार का जादू उतरने पर फैंसी चीज़ें आराम देने के स्थान पर उसमें खलल डालती प्रतीत होती हैं। दूसरे प्रकार के व्यक्ति वे होते हैं जो बाज़ार से खाली हाथ लौट आते हैं क्योंकि वे क्या खरीदें, यह तय ही नहीं कर पाते हैं, जैसा कि लेखक का दूसरा मित्र काफी देर तक बाज़ार में रहने के बावजूद खाली हाथ घर लौटा क्योंकि वह निर्णय ही नहीं ले पाया कि उसे क्या खरीदना चाहिए और क्या छोड़ना? खाली मन को बाज़ार की सभी चीज़ें निमंत्रण देती हैं।

बाज़ार के जादू से बचने का एकमात्र उपाय है कि जब मन खाली हो बाज़ार न जाओ। खालीपन का अर्थ है, किसी लक्ष्य या उद्देश्य का न होना। जो लोग किसी आवश्यकता वश बाज़ार जाते हैं उनका एक निश्चित लक्ष्य होता है। वह उसके अतिरिक्त और कुछ देखते ही नहीं। मन में लक्ष्य हो तो बाज़ार का आकर्षण काम नहीं आ सकता। बाज़ार की सार्थकता है—ज़रूरत में काम आना। मन खाली रखने का अर्थ उसे बंद कर लेना नहीं है। मन को बलपूर्वक बंद करना हठयोग है, लेकिन उसे मनमानी करने की छूट नहीं देनी चाहिए।

तीसरे प्रकार के व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जिन्हें बाज़ार का जादू अपने मायाजाल में नहीं फँसा पाता। लेखक के पड़ोसी भगतजी जो काफी समय से चूरन बेच रहे थे, वे प्रतिदिन छह आने कमाने के बाद बाकी बचा सारा चूरन बच्चों में मुफ्त में बाँट देते थे। वे अपना चूरन न थोक व्यापारी को देते थे और न ही पेशगी ऑर्डर लेते थे। लेकिन अगर उन्हें बाज़ार में जीरा और नमक खरीदना है, जो पंसारी की दुकान पर मिलेगा, तो वे बाज़ार के चौक से ऐसे गुज़र जाते हैं मानों उन्हें वे चीज़ें दिखाई ही न दी हों। वे पंसारी की दुकान से काम की चीज़ें लेकर चल पड़ते हैं। बाज़ार की चकाचौंध उन्हें आकर्षित नहीं कर पाती।

जो लोग बाज़ार के बाज़ारूपन को बढ़ाते हैं वे आपसी सद्भाव को नष्ट कर देते हैं। तब उनमें केवल ग्राहक और विक्रेता का संबंध रह जाता है और वे एक-दूसरे को ठगने की फिराक में रहते हैं। अतः अपनी आवश्यकता को पहचानने वाला व्यक्ति ही बाज़ार को सार्थकता दे पाता है।

स्मृति-अनुप्रयोग

पहला प्रसंग—प्रस्तुत निबन्ध में गहरी वैचारिकता और साहित्य ताकत का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है।

सुलभ लालित्य का दुर्लभ संयोग मिलता है।

तृतीय प्रसंग—बाज़ारवाद के कारण मनुष्य में दुर्गुण या बुराईयों

दूसरा प्रसंग—बाज़ार को अपना गुलाम बना लेने वाली जादुई का समावेश हो जाता है।

(3) धर्मवीर भारती — काले मेढ्रा पानी दे

लेखक परिचय

जन्म—सन् 1926, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)

प्रमुख रचनाएँ—कनुप्रिया, सात-गीत वर्ष, ठंडा लोहा (कविता संग्रह); बंद गली का आखिरी मकान (कहानी-संग्रह); सूरज का सातवाँ घोड़ा, गुनाहों का देवता (उपन्यास); अंधा युग (गीतिनाट्य); पश्यंती, कहनी-अनकहनी, मानव मूल्य और साहित्य, ठेले पर हिमालय (निबंध-संग्रह)।

प्रमुख सम्मान—पद्मश्री, व्यास सम्मान एवं साहित्य के कई अन्य राष्ट्रीय पुरस्कार।

निधन—सन् 1997।

धर्मवीर भारती 'गुनाहों का देवता' उपन्यास से लोकप्रिय हुए। उनका आज़ादी के बाद के साहित्यकारों में विशिष्ट स्थान है। उनकी कविताएँ, कहानियाँ, उपन्यास, निबन्ध, गीतिनाट्य और रिपोर्ताज हिन्दी साहित्य की उपलब्धियाँ हैं। भारती जी के लेखन की एक खास विशेषता यह भी है कि उनकी रचनाएँ हर उम्र और हर वर्ग के पाठकों के बीच लोकप्रिय हैं। वे मूल रूप से व्यक्ति स्वातन्त्र्य, मानवीय संकट एवं रोमानी चेतना के रचनाकार हैं। सभी सामाजिकता एवं उत्तरदायित्वों के बावजूद उनकी रचनाओं में व्यक्ति की स्वतन्त्रता ही सर्वोपरि है। उन्होंने अपने उपन्यासों में निम्न मध्यवर्ग की हताशा, आर्थिक संघर्ष नैतिक विचलन, अनाचार को चित्रित किया है। स्वतन्त्रता के बाद गिरते हुए जीवन मूल्य, अनास्था, मोहभंग, विश्वयुद्धों से उपजा हुआ डर और अमानवीयता की अभिव्यक्ति उन्होंने की। इनके अलावा उन्होंने निबन्ध और रिपोर्ताज भी लिखे। उनके गद्य लेखन में सहजता और आत्मीयता है। वे बड़ी-से-बड़ी बात को बातचीत की सरल शैली में कहते हैं जो सीधे पाठकों के मन को छू लेती है।

‘काले मेघा पानी दे’

सारांश

‘काले मेघा पानी दे’ धर्मवीर भारती द्वारा रचित एक संस्मरण है जिसमें गर्मी से त्राहि-त्राहि करते लोगों के बारे में कहते हुए लेखक कहते हैं कि उसके बचपन में जब आषाढ़ का प्रथम सप्ताह बीत जाने पर भी बारिश के कोई आसार नज़र नहीं आते, कुएँ सूखने लगते, खेतों में पपड़ी पड़कर ज़मीन फटने लगती है ज़ानवर प्यास से मरने लगते, सभी लू के कारण व्यथित होने लगते और पूजा-पाठ, कथा-विधान के अन्य सभी उपाय व्यर्थ सिद्ध होने लगते तब इंद्र सेना अंतिम उपाय के रूप में निकलती। वर्षा के देवता इंद्र और उनकी सेना इंद्र सेना। इसे मेंढक-मंडली के नाम से भी जाना जाता था। इसमें 10-12 से 16-18 उम्र के लड़कों की टोली केवल जाँघिया या लँगोटी पहने गंगा मैया की जय-जयकार करते हुए उछलती-कूदती गलियों में निकलतीं। तब उसकी अगवानी में स्त्रियाँ और लड़कियाँ छज्जे व बाजे पर से उनके ऊपर कठिनाई से सहेजे गए पानी की बाल्टी भर-भरकर फेंकती। इंद्र सेना समवेत स्वर में पुकारती—

काले मेघा पानी दे

गगरी फूटी बैल पियासा

पानी दे गुड़धानी दे

काले मेघा पानी दे।

और इंद्र देवता से पानी की माँग करती। लेकिन लेखक को यह सब अंधविश्वास लगता। पानी की बेहद कमी होने के बावजूद इंद्र सेना पर पानी को फेंकना पानी की बर्बादी करना है। लेखक आर्यसमाजी था तथा कुमार-सुधार सभा नामक समाज सुधारक संगठन का उपमंत्री था और उसमें समाज-सुधार का जुनून सवार था। लेकिन इस सब में मुश्किल यह थी कि लेखक को सबसे ज्यादा प्यार करने वाली जीजी जिनकी उम्र लेखक की माँ की उम्र से भी अधिक थी, वे सभी धार्मिक कार्य लेखक के हाथों करवाती थी ताकि लेखक को पुण्य मिले। लेकिन लेखक ने इंद्र सेना पर पानी डालने की जीजी की बात मानने से इनकार कर दिया। जीजी के द्वारा दिए गए लड्डू-मठरी भी नहीं खाए। जीजी पहले तो नाराज़ हुई फिर लेखक का सिर गोदी में लेकर उसे समझाने लगी कि त्याग के बिना दान का महत्त्व नहीं है। ऋषियों ने भी दान को महान् बताया है। इंद्र सेना पर पानी फेंकना पानी की बर्बादी नहीं वरन इंद्र देवता को दिया गया अर्घ्य है। अपनी ज़रूरतों को पीछे रखकर दूसरों के कल्याण के लिए दिया गया दान ही फलीभूत होता है। जीजी अपनी बात और अधिक स्पष्ट करने के लिए तर्क देती हैं कि जिस तरह किसान चार-पाँच सेर गेहूँ खेत में बुआई कर 40-50 मन गेहूँ प्राप्त करता है, उसी तरह सूखे में हम अपने घर का पानी इंद्र सेना पर फेंक कर पानी की बुवाई करते हैं और काले मेघों से पानी माँगते हैं। तब पानी वाले बादलों की फसल तैयार होती है।

‘यथा राजा तथा प्रजा’ के समान ही ‘यथा प्रजा तथा राजा’ की उक्ति भी सही है। महात्मा गांधी का भी यही मानना था।

लेखक कहता है कि पचास वर्ष बीत जाने पर भी जीजी की बातों की प्रासंगिकता बनी हुई है। माँगें हर क्षेत्र में बढ़ी-बढ़ी हैं पर त्याग का कहीं नामो-निशान नहीं है। सभी लोग अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं। काले मेघों के दल-के-दल उमड़ते हैं। पानी भी झमाझम बरसता है लेकिन फिर भी गगरी फूटी की फूटी और बैल पियासे के पियासे ही रह जाते हैं। कोई नहीं जानता कि यह स्थिति कब बदलेगी ?

(4) फणीश्वर नाथ ‘रेणु’ — पहलवान की ढोलक

लेखिका परिचय

जन्म— 4 मार्च, सन् 1921, औराडी हिंगना (जिला पूर्णिया अब अररिया) बिहार में।

प्रमुख रचनाएँ—मैला आँचल, परती परिकथा, दीर्घतपा, जुलूस, कितने चौराहे (उपन्यास); टुमरी, अगिनखोर, आदिम रात्रि की महक, एक श्रावणी दोपहरी की धूप (कहानी-संग्रह); ऋणजल धनजल, वनतुलसी की गंध, श्रुत-अश्रुत पूर्व (संस्मरण); नेपाली क्रांति कथा (रिपोर्ताज); तथा रेणु रचनावली (पाँच खंडों में समग्र)

जीवन-परिचय—हिन्दी साहित्य में आँचलिक उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु का जीवन उतार-चढ़ावों एवं संघर्षों से भरा हुआ था। इन्होंने कई राजनैतिक एवं सामाजिक आंदोलनों में भी सक्रिय भागीदारी निभाई। उनकी यह भागीदारी एक ओर देश के निर्माण में सक्रिय रही और दूसरी ओर रचनात्मक साहित्य को नया तेवर देने में सहायक रहीं। सन् 1954 में रेणु का बहुचर्चित उपन्यास ‘‘मैला आँचल’’ प्रकाशित हुआ जिससे हिन्दी उपन्यास को एक नयी दिशा मिली। आँचलिकता की अवधारणा ने कथा साहित्य में गाँव की भाषा संस्कृति और वहाँ के लोक-जीवन को केन्द्र में लाकर खड़ा कर दिया। उनकी रचनाओं में अंचल कच्चे और अनगढ़ रूप में ही आता है इसलिए उनका यह अंचल एक तरफ़ शस्य श्यामल है तो दूसरी तरफ़ धूल भरा और मैला भी। उन्होंने अपनी रचनाओं से अंचल की समस्याओं की ओर लोगों का ध्यान खींचा।

रेणु की कहानी ‘पहलवान की ढोलक’ में ढोलक की उठती-गिरती आवाज़ और पहलवान के क्रियाकलापों का दुर्लभ सामंजस्य है।

निधन— 11 अप्रैल, सन् 1977 पटना में।

‘पहलवान की ढोलक’

सारांश

सर्दी के मौसम में अमावस्या की ठंडी और अँधेरी रात के सन्नाटे में मलेरिया और हैजे से पीड़ित गाँव वालों की हृदय विदारक सिसकियाँ, कराहने की आवाज़ें व बच्चों के रोने की आवाज़ें आती। सियारों व पेचकों की डरावनी आवाज़ें कभी-कभी उस निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती। ऐसे समय में पहलवान लुट्टन शाम से सुबह तक अपनी ढोलक बजाकर मृत गाँव में संजीवनी शक्ति भरता रहता था।

उसकी बचपन में ही शादी हो चुकी थी इसलिए लुट्टन के माता-पिता नौ वर्ष की उम्र में ही चल बसे थे। विधवा सास ने ही उसे पाल-पोसकर बड़ा किया था। बचपन से कसरत करने के कारण बड़े होने पर वह पहलवान लगने लगा।

एक बार वह श्याम नगर के मेले में दंगल देखने गया। वहाँ पंजाब से चाँद सिंह पहलवान जिसे ‘शेर के बच्चे’ का टाइटल मिल चुका था, भी आया था। देशी नौजवान पहलवान उससे लड़ने की कल्पना भी नहीं कर पाते थे। लुट्टन ने बिना सोचे-समझे उसे दंगल की चुनौती दे डाली। चाँद सिंह और लुट्टन के मध्य दंगल का मुकाबला शुरू ही हुआ था कि श्याम नगर के वृद्ध राजा ने लुट्टन को कुश्ती से हटने को कहा। लेकिन लुट्टन की ज़िद के आगे उन्हें दंगल की इज़ाज़त देनी पड़ी। ढोल बाज़े की आवाज़ के बीच दंगल शुरू हुआ। लुट्टन ने चाँद सिंह का दाँव काटकर उसकी गर्दन पकड़ ली। ढोल की आवाज़ ‘चट्-क-चट्-धा’ का अर्थ ‘उठाकर’ पटक दे लगाकर उसने चाँद सिंह को उठाकर पटक दिया और लुट्टन ने सबसे पहले ढोल को प्रणाम किया और फिर राजा साहब को गोद में उठा लिया। चारों ओर जय-जयकार होने लगी। राजा साहब ने लुट्टन को पुरस्कृत करने के साथ ही राज पहलवान के पद पर नियुक्त कर लिया।

धीरे-धीरे लुट्टन सिंह की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। उसने कुछ ही वर्षों में काला खाँ सहित सभी नामी पहलवानों को धूल चटा दी। पौष्टिक भोजन, व्यायाम और राजा साहब के स्नेह ने उसकी प्रसिद्धि में चार चाँद लगा दिए। कोई उससे लड़ने का साहस भी न कर पाता। इसी तरह पंद्रह वर्ष बीत गए। लुट्टन की सास और उसकी पत्नी दोनों की मृत्यु हो गई। लुट्टन के दोनों बेटे अपने पिता के समान ही भावी पहलवान भी घोषित किए जा चुके थे। लुट्टन दोनों बेटों को दंगल के गुरु सिखाया करता तथा मालिक को कैसे खुश रखा जाता है आदि की शिक्षा भी नित्य देता था।

राजा साहब की मृत्यु के पश्चात् उनके विलायत से आए बेटे ने राजकाज सँभाला। घोड़े की रेस में दिलचस्पी रखने वाले राजकुमार ने पहलवानों को बोझ समझकर बाहर का रास्ता दिखाया। लुट्टन गाँव के बाहर झोंपड़ी बनाकर रहने लगा। लड़के मज़दूरी कर जीवनयापन करने लगे। गाँव में अकाल पड़ने पर और मलेरिया व हैजे के प्रकोप से गाँव वाले बेहाल हो गए। रोज़ दो-तीन लाशें उठने लगीं। औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में लुट्टन की ढोलक ही संजीवनी शक्ति भरती थी। मरते हुए प्राणियों को आँखें मूँदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती। एक दिन लुट्टन के दोनों बेटे भी महामारी की चपेट में आकर चल बसे। लुट्टन अपने दोनों बेटों को कंधे पर लादकर नदी में बहा आया। रात में फिर पहलवान की ढोलक की आवाज़ सुन लोग दंग रह गए, लेकिन एक रात जब ढोलक की आवाज़ सुनाई नहीं दी तो उसके रुग्ण शिष्यों ने देखा कि पहलवान की लाश चित्त पड़ी है। एक शिष्य ने कहा कि गुरुजी की इच्छा थी कि जब मैं मर जाऊँ तो चित्ता पर मुझे चित्त नहीं पेट के बल सुलाना और ढोल बजा देना।

स्मृति-अनुप्रयोग

पहला प्रसंग—कहानी में प्रत्येक पात्र का सजीव चित्रण हुआ है।

दूसरा प्रसंग—व्यवस्था बदलने पर लोक-कला और इसके कलाकार अप्रासंगिक हो जाने की कहानी।

तृतीय प्रसंग—महामारी के दुष्परिणामों के कारण मौत का षड़यन्त्र फैलना।

चतुर्थ प्रसंग—लोक-कलाओं को प्रासंगिक बनाए रखने के लिए लोगों की भूमिका पर चिंतन-मनन करना।

(5) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी — शिरीष के फूल

लेखक परिचय

जन्म—सन् 1907, आरत दुबे का छपरा, बलिया (उत्तर प्रदेश)

प्रमुख रचनाएँ—अशोक वेफ पूफल, कल्पलता, विचार और वितर्क, वुफटज, विचार-प्रवाह, आलोक पर्व, प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद (निबंध-संग्रह); बाणभ की आत्मकथा, चारफचंद्रलेख, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा (उपन्यास); सूर साहित्य, कबीर, मध्यकालीन बोध का स्वरूप, नाथ संप्रदाय, कालिदास की लालित्य-योजना, हिंदी साहित्य का आदिकाल, हिंदी साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास (आलोचना-साहित्येतिहास); संदेश रासक, पृथ्वीराजरासो, नाथ-सिद्धों की बानियाँ (गद्य-संपादन); विश्व भारती (शांतिनिकेतन) पत्रिका का संपादन;

पुरस्कार व सम्मान— साहित्य अकादमी ('आलोक पर्व' पर) भारत सरकार द्वारा 'पद्मभूषण', लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा डी. लिट्।

मृत्यु— सन् 1979, दिल्ली में।

जीवन-परिचय— आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्य भारतवर्ष के सांस्कृतिक इतिहास की रचनात्मक परिणति है। उनकी रचनाएँ हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, बांग्ला आदि भाषाओं में रचित हैं। उनका साहित्य इतिहास, संस्कृति, धर्म, दर्शन और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की व्यापकता व गहनता लिए हुए है। वे ज्ञान को बोध और पांडित्य की सहृदयता में ढाल कर ऐसा रचना संसार हमारे सामने उपस्थित करते हैं जो उपस्थित करते हैं जो विचार की तेजस्विता, कथन के लालित्य और बंध की शास्त्रीयता का संगम है। उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया है कि भारतीय संस्कृति किसी एक जाति की देन नहीं बल्कि अनेक जातियों के श्रेष्ठ गुणों का संयोग है।

द्विवेदी जी स्त्री को सामाजिक अन्याय का सबसे बड़ा शिकार मानते हैं और उसके लिए समाधान खोजने पर बल देते हैं। मानव की जिवीवषा और विजययात्रा में उनकी अखंड आस्था है। इसी से वे मानवतावादी साहित्यकार व समीक्षक के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

यहाँ प्रस्तुत ललित निबंध 'शिरीष के फूल' निबंध में लेखक ने कठिन व विपरीत परिस्थितियों में अविचल होकर, सौंदर्य बिखेरते शिरीष के मनुष्य को भी प्रेरणा लेने को कहा है। वे गांधीवादी मूल्यों को भी महत्वपूर्ण मानता है और मनुष्य को आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देता है।

लेखक शिरीष को अवधूत कहता है जो भीषण गर्मी में भी अपने कोमल पुष्पों का सौंदर्य बिखेर रहा होता है। वह इसकी तुलना कबीर, कालिदास, गांधीजी, सुमित्रानंदन पंत, कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर से कहता है। वह पुराने को नए में बदलने के पक्ष में है और चाहता है कि पुराना अपना स्थान नए को खुशी-खुशी दे दे। शिरीष के माध्यम से लेखक मनुष्य को उसी की तरह अजेय जिजीविषा व धैर्य के साथ, लोक के साथ चिंतारत होकर कर्तव्यशील बने रहने की प्रेरणा देता है। वह वैभव-विलास के खोखलेपन के विरुद्ध है और समस्त प्राकृतिक और मानवीय वैभव में रय जाना चाहता है।

पाठ का सारांश

शिरीष का फूल एक ललित निबंध है। इसमें लेखक ने बाह्य कठोर परिस्थितियों में भी समदर्शी रहते हुए, धैर्यपूर्वक, कर्तव्यशील बने रहने के मानवीय मूल्य स्थापित किए हैं।

लेखक ने सभी फूलों के ऊपर शिरीष के फूल की श्रेष्ठता स्थापित की है। उसने इस फूल में कोमलता से कठोरता को भी अनुभव किया है। शिरीष के फूल भीषण गर्मी में भी खिले रहते हैं। वैसे ये वर्ष के अधिकतर समय में खिले रहते हैं। लेकिन लेखक ने भीषण गर्मी में भी इसके खिले रहने को विपरीत परिस्थितियों में भी जीने की कठोर और मस्त भावना को प्रदर्शित किया है। इस प्रकार यह कालजयी अवधूत की तरह जीवन में अजेयता का मंत्र देता प्रतीत होता है। शिरीष के पुराने फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फल-फूल के आ जाने पर भी अपना स्थान छोड़ने को तैयार नहीं होते। लेखक यहाँ यह कहना चाहता है कि पुरानी पीढ़ी को नई पीढ़ी व नई पीढ़ी के द्वंद्व की ओर लेखक ने संकेत किया है। पुरानी पीढ़ी को स्वयं ही नई पीढ़ी के लिए स्थान छोड़ देना चाहिए, एक स्थान पर जमे रहना नहीं चाहिए क्योंकि जीवन में गतिशीलता आवश्यक है। और फिर जो फल लगा है उसका झरना भी निश्चित है।

ऐसा लगता है कि कालदेव सभी जीवों को निगलने को तैयार बैठा है। दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। इस संघर्ष में गतिशील, अर्धमुखी व्यक्ति ही अपने अस्तित्व को बचाए रख सकता है। जो लोग पुराने व खोखले विचारों में उलझे रहते हैं वे कभी सम्मान प्राप्त नहीं कर सकते परिवर्तन तो प्रकृति का शाश्वत नियम है।

लेखक ने बताया है कि वैज्ञानिकों के अनुसार पेड़-पौधे वायुमंडल से रस लेते हैं। शिरीष के फूल एक अवधूत के समान मस्त रहकर अपना अस्तित्व बनाए हुए है। कबीर, कालिदास, गांधी ऐसी ही विभूतियाँ रही जो समदर्शी होने के कारण, फक्कड़ाना मस्ती के अनासक्त योगी रहे। लेखक के अनुसार, केवल ब्रह्मा, वेदव्यास, वाल्मीकि ही कवि हैं क्योंकि केवल शब्द लिखना व तुकबंदी करना ही कवित्व नहीं है। दुष्यंत ने शकुंतला में केवल बाहरी सौंदर्य देखा, आंतरिक नहीं। उसके प्रेम में शिरीष के फूलों जैसी भनासक्ति नहीं थी। इस सृष्टि को समझने के लिए योगी भी अनासक्त शून्य दृष्टि और प्रेमी की सरस पूर्णता आवश्यक है। लेखक कहता है कि कालिदास के अलावा सुमित्रानंदन पंत व कविवर रवीन्द्र नाथ टैगोर में यह गुण विद्यमान था कि वे बाहरी और आंतरिक सौंदर्य का वर्णन कर सकें।

लेखक आत्मबल को सिद्ध करने वाले अवधूत महात्मा गांधी को याद करते हैं और कहते हैं कि कैसे शिरीष और गांधी विपरीत परिस्थितियों में भी अनासक्त रहते हुए सरस बने रह सकते हैं। गांधी तो प्रतिकूल परिस्थितियों में आत्मबल के सहारे अंग्रेजों से जीत गए थे। शिरीष और गांधी दोनों वायुमंडल से रस खींचकर कोमल व कठोर हो सके थे। लेकिन आज वह अवधूत कहाँ हैं?

स्मृति-अनुप्रयोग

पहला प्रसंग—शिरीष के फूलों के माध्यम से मनुष्य को अजेय जिजीविषा और तुमुल कोलाहल कलइ के बीच धैर्यपूर्वक, लोक के साथ चिंतारत, कर्त्तव्यशील बने रहने को महान मूल्य के रूप में स्थापित करना है।

दूसरा प्रसंग—गांधीजी के मूल्यों के अभाव की पीड़ा से अवगत कराता है।

तृतीय प्रसंग—तत्कालीन जीवन व सामंती वैभव-विलास का खोखलापन उजागर करता है।

चतुर्थ प्रसंग—साहित्य में शिरीष के फूल को नजरंदाज़ किए जाने से लेखक आहत होता है।

(6) बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर — श्रम विभाजन; मेरी कल्पना का आदर्श समाज

लेखक परिचय

जन्म—14 अप्रैल, सन् 1891, महु (मध्य प्रदेश) में

प्रमुख रचनाएँ—दँ कास्ट्स इन इंडिया, देयर मेकेनिज़्म, जेनेसिस एंड डेवलपमेंट (1917, प्रथम प्रकाशित कृति); द अनटचेबल्स, हू आर दे? (1948); हू आर द शूद्राज़ (1946); बुद्धा एंड हिज़ धम्मा (1957); थाट्स ऑन लिंग्युस्टिक स्टेट्स (1955); द प्रॉब्लम ऑफ़ द रुपी (1923); द एबोलुशन ऑफ़ प्रोविशियल फ़ायनांस इन ब्रिटिश इंडिया (पी एच.डी की थीसिस, 1916); द राइज़ एंड फ़ॉल ऑफ़ द हिंदू वीमेन (1965); एनीहिलेशन ऑफ़ कास्ट (1936); लेबर एंड पार्लियामेंट्री डेमोक्रेसी (1943); बुद्धिज़्म एंड कम्युनिज़्म (1956), (पुस्तकें व भाषण); मूक नायक, बहिष्कृत भारत, जनता (पत्रिका-संपादन); हिंदी में उनका संपूर्ण वाङ्मय भारत सरकार के कल्याण मंत्रालय से बाबा साहेब आंबेडकर संपूर्ण वाङ्मय नाम से 21 खंडों में प्रकाशित हो चुके हैं।

निधन—दिसंबर, सन् 1956, दिल्ली में

जीवन-परिचय—मानव मुक्ति के पुरोधे बाबा साहेब भीमराव आम्बेडकर अपने समय के सबसे सुपठित जनों में से एक थे। उन्होंने संस्कृत का धार्मिक, पौराणिक और पूरा वैदिक वाङ्मय अनुवाद के ज़रिये पढ़ा। वे इतिहास-मीमांसक, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री शिक्षाविद तथा धर्म दर्शन के व्याख्याता बनकर उभरे। समाज और राजनीति में बेहद सक्रिय भूमिका निभाते हुए उन्होंने अछूतों, स्त्रियों और मजदूरों को मानवीय अधिकार व सम्मान दिलाने के लिए अथक संघर्ष किया। उन्होंने जीवन भर दलितों की मुक्ति एवं सामाजिक समता के लिए संघर्ष किया। उन्हें भी जाति आधारित उत्पीड़न-शोषण एवं अपमान से गुजरना पड़ा था। अतः उनका पूरा लेखन इसी संघर्ष पर आधारित रहा। इन्होंने बुद्ध, कबीर और ज्योतिबा फूले से प्रेरणा ली। इन्होंने बौद्ध धर्म अपनाया। इन्हें भारतीय संविधान का निर्माता कहा जाता है।

यहाँ प्रस्तुत पाठ आम्बेडकर जी का विख्यात भाषण है। आज के जाति मज़हब आधारित विषाक्त सामाजिक-राजनैतिक माहौल में इसकी प्रासंगिकता और बढ़ गई है।

(i) श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा

श्रम-विभाजन सभ्य समाज के लिए स्वीकार्य हो सकता है लेकिन जाति के आधार पर श्रमिकों का विभाजन किया जाना किसी भी दृष्टि से स्वीकार्य नहीं है, क्योंकि श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में विभाजन किसी भी सभ्य समाज में नहीं किया गया है। जबकि भारतीय जाति प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन करने के साथ विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँचा व नीचा भी मानती है। इसलिए जातिप्रथा श्रम विभाजन का रूप होने के बावजूद आपत्तिजनक है। श्रम-विभाजन जाति-प्रथा का स्वाभाविक विभाजन तभी माना जा सकता है जब यह लोगों की रुचि पर आधारित हो। उनमें व्यवसाय के प्रति कौशल विकसित हो। भारतीय जाति-प्रथा में श्रम-विभाजन व्यक्ति की रुचि या योग्यता के आधार पर न होकर माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार गर्भधारण के समय ही कर दिया जाता है।

इस प्रकार के विभाजन में मनुष्य पेशे के अनुपयुक्त तथा अपर्याप्त होने पर जीवन भर उसी पेशे से बँधा रहता है और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी पेशा नहीं बदल पाता। यह प्रथा आर्थिक पहलू से भी न्यायसंगत नहीं है तथा मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा, रुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उसे निष्क्रिय बना देती है।

(ii) मेरी कल्पना का आदर्श समाज

लेखक के अनुसार, आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता, भाईचारे पर आधारित तथा लोकतांत्रिक होना चाहिए जिसमें अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो। लोगों को अपनी शक्ति के सक्षम और प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता भी शेष अन्य प्रकार की प्राप्त स्वतंत्रताओं के समान ही दी जाए। लेकिन जाति-प्रथा के प्रशंसक इसे स्वीकार नहीं करेंगे क्योंकि इसका अर्थ होगा, लोगों को व्यवसाय चुनने की आज़ादी देना। इसके अभाव में व्यक्ति दासता से मुक्त नहीं हो पाएगा। 'दासता' केवल कानूनी नहीं होती। दूसरों के द्वारा निर्धारित व्यवहारों व कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना भी दासता ही है।

सभ्य समाज में स्वतंत्रता के साथ समता का होना भी अनिवार्य है। लेकिन समता के आलोचकों के अनुसार, चूँकि सभी मनुष्य बराबर नहीं होते, अतः उन्हें समान मानना गलत है। मनुष्य की क्षमता शारीरिक, वंश परंपरा, सामाजिक परंपरा के रूप में माता-पिता की कल्याण कामना, शिक्षा तथा वैज्ञानिक ज्ञानार्जन; मनुष्य के अपने प्रयत्न, इन तीन दृष्टियों से तय की जाती है। इन विभिन्नताओं के आधार पर लोगों के साथ असमान व्यवहार करना ठीक नहीं। सभी को आरंभ से ही समान अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए और समान व्यवहार करना चाहिए। राजनीतिज्ञ भी सभी के साथ एक-समान व्यवहार करता है क्योंकि अधिक जनसंख्या व समय की कमी के कारण वह आवश्यकताओं व क्षमताओं के आधार पर अलग-अलग प्रकार के व्यवहार की आवश्यकता होने पर समाज को वर्गों व श्रेणियों में नहीं बाँट सकता। अतः वह समान व्यवहार्य सिद्धांत का ही पालन करता है और यही उसके व्यवहार की एक मात्र कसौटी है।

स्मृति-अनुप्रयोग

पहला प्रसंग—आम्बेडकर जी की बहुमुखी विद्वता से परिचित होना जो एकांत ज्ञान साधना के स्थान पर मानव मुक्ति व जन-कल्याण पर आधारित थी।

दूसरा प्रसंग—आदर्श समाज के अनिवार्य अंगों की जानकारी प्राप्त करना।

तृतीय प्रसंग—जाति-मजहब आधारित विषाक्त सामाजिक-राजनैतिक माहौल में आदर्श समाज की प्रासंगिकता के महत्व को समझना।

अनुपूरक पाठ्यपुस्तक वितान (भाग-2)

अध्याय — 6 विषय वस्तु पर आधारित प्रश्न

1. सिल्वर वैडिंग — मनोहर श्याम जोशी

‘मनोहर श्याम जोशी द्वारा रचित कहानी ‘सिल्वर वैडिंग’ अपने शिल्प में एक नए भाषिक अंदाज़ तथा मुहावरों से युक्त है। प्रस्तुत कहानी में मनोहर श्याम जी ने स्पष्ट किया है कि आधुनिकता की ओर बढ़ता हुआ हमारा समाज एक ओर कई नई उपलब्धियों को समेटे हुए है, तो दूसरी ओर मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने वाले मूल्य कहीं घिसते चले गए हैं। इस कहानी में एक संस्कारी व्यक्ति का आधुनिक युग के लोगों को बदलते देखकर परेशान होना दर्शाया गया है। कहानी में नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के लोगों के विचारों में व्याप्त विषमता को स्पष्ट किया गया है। इसमें (कहानी में) यशोधर बाबू की दुविधा का वर्णन है। ‘जो हुआ होगा’ में यथास्थितिवाद का भाव है, तो ‘समहाउ इंप्रॉपर’ में एक अनिर्णय की स्थिति है। ये दोनों ही भाव इस कहानी के मुख्य चरित्र यशोधर बाबू के भीतर के द्वंद्व हैं।

पाठ का सारांश

यशोधर बाबू और उनका व्यवहार— यशोधर बाबू एक संस्कार संपन्न व्यक्ति हैं। उनका व्यवहार सभी के लिए उचित है, किंतु आधुनिक लोग उनके विचारों से सहमत नहीं रहते। दफ्तर में भी वे समय पर जाते हैं और प्रसन्नचित्त होकर काम करते हैं। ‘असिस्टेंट ग्रेड’ में आए एक नए लड़के चड्ढा ने यशोधर बाबू से बदतमीजी से बात की, फिर भी बाबू जी ने उसकी धृष्टता को अनदेखा कर दिया। यशोधर बाबू ने शादी की पच्चीसवीं सालगिरह पर दफ्तर के सभी कर्मचारियों को चाय पिलाई।

यशोधर बाबू और किशन दा—यशोधर बाबू के जीवन में किशन दा का महत्त्व गुरु जैसा था, क्योंकि जब यशोधर बाबू गाँव से दिल्ली आए थे, तब किशन दा ने ही उन्हें अपने यहाँ मेस का रसोइया बनाया, फिर बाद में अपने ही दफ्तर में सरकारी नौकरी दिलाई और जीवन के हर कठिन समय में किशन दा सदैव ही यशोधर बाबू के साथ बने रहे। किशन दा ने विवाह नहीं किया था। जब किशन दा की मृत्यु हुई, तो उनकी बिरादरी से यशोधर बाबू ने उनकी मृत्यु का कारण पूछा। उन्होंने ‘जो हुआ होगा’ कहकर यह बात समाप्त कर दी अर्थात् सही कारण का किसी को कुछ पता नहीं चला। यशोधर बाबू जीवनपर्यंत किशन दा के सिद्धांतों पर ही चलते रहे।

यशोधर बाबू की विवशता—यशोधर बाबू को आधुनिक लोगों के विचार बिल्कुल भी अच्छे नहीं लगते थे और लोग उनके विचारों को सुनकर मानना नहीं चाहते थे। यशोधर बाबू को जब कोई बात गलत लगती, तो वे ‘समहाउ इंप्रॉपर’ कहकर चुप लगा जाते हैं। ‘समहाउ इंप्रॉपर’ का अर्थ है कुछ न कुछ गलत होना।

यशोधर बाबू और उनका परिवार—यशोधर बाबू के परिवार में उनकी पत्नी, एक बेटी और तीन बेटे हैं। उनकी बेटी डॉक्टरी की पढ़ाई करना चाहती है। उनका बड़ा बेटा भूषण विज्ञापन एजेंसी में ₹ 1,500 प्रतिमाह पर काम करता है, दूसरा बेटा दूसरी बार आई. ए. एस. की परीक्षा देने की तैयारी कर रहा है और तीसरा बेटा स्कॉलरशिप लेकर अमेरिका चला गया है। यशोधर बाबू का परिवार आधुनिक विचारों का समर्थक है और वे पुराने विचारों वाले व्यक्ति हैं इसीलिए उनका अपने परिवार के साथ मतभेद बना रहता है। यशोधर बाबू यह चाहते हैं कि उनका परिवार उनसे सलाह लेकर दुनियादारी का काम करे, पर बच्चे ये कहकर उन्हें चुप करा देते हैं कि जब आपको कुछ पता ही नहीं है, तो क्या पूछें? यशोधर बाबू का मंदिर जाना, प्रवचन सुनना व पूजा-पाठ करना परिवार को नहीं सुहाता था। उनकी पत्नी और बच्चे चाहते थे कि यशोधर बाबू पुरानी परंपराओं को छोड़कर नए युग की रीतियों को अपनाएँ।

यशोधर बाबू की सिल्वर वैडिंग—बाबू जी को पता नहीं था कि उनके घर पर उनकी शादी की पच्चीसवीं सालगिरह की पार्टी चल रही है। वे पार्टी इत्यादि से प्रसन्न नहीं रहते थे लेकिन उन्हें कहीं-न-कहीं इस बात की खुशी भी थी कि जिस अनाथ के जन्मदिन पर आज तक लड्डू भी नहीं आए, आज उसी की शादी की सालगिरह की पार्टी बहुत ही आधुनिक रीति-रिवाजों के साथ मनाई जा रही है। न चाहते हुए भी पार्टी में उन्होंने अपनी पत्नी के साथ केक काट ही दिया। उनके बड़े बेटे ने उन्हें ऊनी ड्रेसिंग गाउन उपहार में दिया और कहा कि जब आप सवरे दूध लेने जाएँ तो इसे अवश्य पहनकर जाएँ। यशोधर बाबू की आँखों की कोर नम हो गई, क्योंकि वे चाहते थे कि उनके बच्चे घर की सभी ज़िम्मेदारियों का भार अपने ऊपर ले लें, लेकिन बेटे भूषण ने नया गाउन देते हुए भी दूध लाने की ज़िम्मेदारी उन्हीं के कंधों पर डाल दी। गाउन पहनकर यशोधर बाबू को लगता था कि उनके अंगों में किशन दा उतर आए हों।

प्रस्तुत कहानी नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के लोगों के विचारों एवं व्यवहारों में आए परिवर्तन को दर्शाती है।

स्मृति-अनुप्रयोग

- ▶ कहानी में, समाज आधुनिकता की ओर बढ़ रहा है व उपलब्धियाँ भी हासिल कर रहा है परन्तु मानवीय मूल्यों को नकारा जा रहा है।
- ▶ अनिर्णय की स्थिति में रहने वाले लोग स्थितियों को ज्यों का त्यों ही स्वीकार कर लेना चाहते हैं। वे बदलाव के पक्ष में ही नहीं रहते।
- ▶ आधुनिकता की दौड़ में अपनों के साथ परायापन पैदा होना चिंता का विषय है।
- ▶ देश के 'प्रापर' विकास में बाधक 'समहाउ' तत्वों को हटाना पड़ेगा।

2. जूझ (आनंद यादव)

'जूझ' शीर्षक कहानी मराठी के प्रख्यात कथाकार डॉ. आनंद यादव के बहुचर्चित आत्मकथात्मक उपन्यास का एक अंश है, जो कि कथानायक आनंद के जीवन संघर्षों से संबंधित है। आनंद पाठशाला जाने के लिए लालायित रहता है, परंतु पारिवारिक दुविधाओं के कारण वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति में बाधा महसूस करता है। आनंद यादव ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से आनंद की मार्मिक चेतना को पाठकों के सामने जीवंत कर दिया है। इस कहानी में एक किशोर के देखे एवं भोगे हुए गँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ और परिवेश की अत्यंत विश्वसनीय जीवन्त गाथा है।

पाठ का सारांश

आनंद और उसका परिवार—आनंद के परिवार में उसके पिता (दादा) और माँ रहते थे। आनंद अपने पिता से अपने पढ़ने की बात नहीं कर पाता था क्योंकि उसके पिता अच्छे आचरण वाले नहीं थे तथा वे अत्यधिक गुस्से वाले भी थे। वे सारा दिन गाँव में घूमते और रमाबाई के कोठे पर भी जाते थे। वे घर-गृहस्थी के किसी भी काम में हाथ नहीं बँटाते थे और खेत का सारा काम आनंद से कराते थे इसीलिए वे आनंद को पाठशाला नहीं भेजना चाहते थे। आनंद की माँ चाहती थी कि उसका बेटा सातवीं कक्षा तक अवश्य पढ़ाई करे, पर दादा के आगे उसकी एक न चलती थी। आनंद और उसकी माँ ने दत्ता जी के पास जाने की सोची, क्योंकि वे ही पाठशाला जाने के लिए पिता (दादा) को समझाकर राजी कर सकते थे।

दत्ता जी राव का व्यवहार—दत्ता जी राव देसाई गाँव के एक प्रभावशाली व्यक्ति हैं। उन्होंने आनंद और उसकी माँ की सभी बातों को ध्यानपूर्वक सुनकर कहा कि दादा को मेरे पास भेजना। दत्ता जी राव भी चाहते थे कि आनंद पढ़-लिखकर एक शिक्षित व्यक्ति बने। वे पढ़ाई के महत्त्व को जानते थे। जब दादा दत्ता जी के पास आए तो उन्होंने उस (दादा) को बहुत धमकाया और कहा कि तेरी ओर से आनंद को पाठशाला भेजने में कोई बाधा नहीं होनी चाहिए। यदि वह आनंद को पढ़ाने में असमर्थ है तो वे स्वयं ही आनंद को पाठशाला भेज देंगे। आधुनिक युग के अनुसार दत्ता जी का व्यवहार बहुत ही उत्तम श्रेणी का है।

आनंद और उसकी पाठशाला—आनंद जब पहले दिन पाठशाला गया तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसे पाँचवीं कक्षा में ही दुबारा जाकर बैठना पड़ा क्योंकि आनंद ने पहले ये कक्षा उत्तीर्ण नहीं की थी। चह्वाण नामक लड़के ने उसकी मटमैली धोती और गमछे को लेकर मज़ाक उड़ाया तो आनंद का मन बहुत दुःखी हुआ पर कक्षा का वसंत पाटिल नाम का एक बहुत होशियार लड़का आनंद का मित्र बन गया। आनंद वसंत को देखकर पढ़ाई में भी मन लगाने लग गया और अब उसे भी कक्षा में शाबाशी मिलने लगी। आनंद को अब पाठशाला जाने में आनंद आने लगा।

आनंद और श्री सौंदलगेकर जी—श्री सौंदलगेकर जी एक मराठी अध्यापक हैं। वे कक्षा में कविता बहुत ही आनंद के साथ गाकर पढ़ाते हैं। उनके पास सुरीला गला, छंद की बढ़िया चाल और रसिकता भी थी। आनंद को सौंदलगेकर जी की कविताएँ इतनी अच्छी लगतीं कि वह जब पाठशाला के बाद खेत में काम करने जाता तो हर समय उन्हें गुनगुनाता रहता था। उसकी रुचि कविता में दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। सौंदलगेकर जी भी उसे विशेष रूप से सिखाने लगे और आनंद की प्रशंसा भी करने लगे। सौंदलगेकर जी से ही प्रेरणा लेकर आनंद अब स्वयं भी कविता रचने लगा और उसे अपने गुरु जी को दिखाता था, जिससे वे कविता की कमी को ठीक कर सकें इसीलिए आनंद अब श्री सौंदलगेकर जी के बहुत करीब आ गया था।

आनंद और उसकी लगन—आनंद को कविता लिखने की ऐसी लगन लगी कि जब उसके पास कागज़ और पेंसिल न होती तो वह लकड़ी के छोटे टुकड़े से भैंस की पीठ पर रेखा खींचकर लिखता या पत्थर की शिला पर कंकड़ से लिख लेता था। कभी-कभी वह कविता रविवार को लिखता, तो सोमवार को सबसे पहले अपनी कविता मास्टर जी को दिखाता और कभी तो वह सोमवार का इंतज़ार ही नहीं कर पाता, तो रात को ही सौंदलगेकर मास्टर जी के घर जाकर कविता दिखा देता था इसीलिए आनंद की मराठी भाषा में भी सुधार आया और अब आनंद अलंकार, छंद, लय आदि सूक्ष्मता से समझने लगा। आनंद को कविता की लगन ऐसी लगी कि अब उसके मन में कोई-न-कोई मधुर गीत बजता ही रहता।

स्मृति-अनुप्रयोग

- ▶ 'जूझ' कथा एक किशोर के देखे और भोगे हुए गँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ और उसके रंगारंग परिवेश की अत्यन्त विश्वसनीय जीवन गाथा है।
- ▶ इसमें जीवन का मर्मस्पर्शी चित्रण है।
- ▶ यह अस्त-व्यस्त अलमस्त निम्न मध्यवर्गीय ग्रामीण समाज और उससे लड़ते-जूझते किसान मजदूरों के संघर्ष की भी कथा है।
- ▶ इस कथा में किशोरों के साहित्य, संगीत और अन्य कई विषयों में रुचि बढ़ने की भी आहट पता चलती है।

3. अतीत में दबे पाँव (ओम थानवी)

लेखक ओम थानवी ने 'अतीत में दबे पाँव' नामक पाठ में ऐतिहासिक सिंधु घाटी की सभ्यता की ऐतिहासिकता से पाठकों को परिचित कराया है। प्रस्तुत रचना ओम थानवी के यात्रा-वृत्तांत और रिपोर्ट का मिला-जुला रूप है, जो अब तक की जानकारी में भारतीय भूमि पर ही नहीं, बल्कि विश्व फलक पर मान्य इस सभ्यता को उतने ही सुनियोजित ढंग से पुनर्जीवित करता है, जितने सुनियोजित ढंग से उसके दो महान नगर हड़प्पा और मोहनजो-दड़ो बसे हुए थे। लेखक ने अपनी यात्रा के दौरान यह पाया कि इन दोनों ही नगरों का सौंदर्यबोध राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाज पोषित था। वह सभ्यता ताकत के बल पर अनुशासित होने के स्थान पर अपनी समझ से अनुशासित थी। उसमें भव्यता थी, पर आडंबर नहीं। लेखक के विचार से आधुनिक व्यवस्था के आ जाने से हमारी पुरानी संस्कृति की विशेषताएँ विकास की भेंट चढ़ गई हैं।

पाठ का सारांश

सिंधु सभ्यता का केंद्र—प्रस्तुत पाठ में पाकिस्तान स्थित मुहनजो-दड़ो और हड़प्पा शहरों का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। मोहन जोदड़ो सिंधु घाटी सभ्यता का केंद्र था। यह नगर ताम्रकाल के शहरों में अपनी बड़ी-बड़ी गलियों व इमारतों की अनुभूति कराते हुए सबसे बड़ा नगर रहा होगा। इसकी जनसंख्या लगभग 85,000 रही होगी। खुदाई से प्राप्त मुहरें, इमारतें, खिलौने व बर्तन आदि इस सभ्यता की जानकारी देते हुए यह बताते हैं कि यह शहर किस प्रकार पूर्णतः योजना के अनुसार बसाया गया था।

नगर-नियोजन व बौद्ध स्तूप—वर्ष 1922 में बौद्ध स्तूप के आस-पास की गई खुदाई में ईसा पूर्व के निशान प्राप्त हुए। भारत की सिंधु घाटी सभ्यता सबसे प्राचीन सभ्यता है। इसका वैज्ञानिक आधार पाए जाने पर मिस्र और मेसोपोटामिया की सभ्यता के अनुरूप ही इस सभ्यता को आँका गया है। यह शहर भारत का लैंडस्केप है, क्योंकि इस शहर को बनाने व यथार्थ स्वरूप देने का कार्य पूर्व नियोजित व्यवस्था के अनुसार एक संपूर्ण प्रणाली के अनुरूप किया गया होगा। इस शहर के दक्षिण में कुछ कामगारों की बस्तियाँ हैं।

संपन्न वर्ग की बस्तियाँ—इस सभ्यता की सबसे अच्छी व्यवस्था यह थी कि वह समाज को विकसित करने के लिए कार्य करती थी। यह सभ्यता सबसे सुंदर थी, और पूर्णतः विकसित थी इसीलिए आज भी हम इस सभ्यता का उदाहरण देते हैं। इस सभ्यता में संपन्न वर्ग की बस्तियाँ पाई गई हैं। 5000 सालों में निम्न वर्ग की बस्तियाँ मिट गई हैं।

महाकुंड व सामुदायिक केंद्र—यहाँ पर पक्की ईंटों का एक कुंड है, जिसमें पानी की निकासी का उचित प्रबंध पाया गया। सामुदायिक केंद्र जैसा एक सभा-भवन इसके दक्षिण में स्थित है, जो कि बीस खंभों पर आधारित है।

फसल—बैलगाड़ियों का प्रयोग यहाँ ढुलाई के लिए होता था। यहाँ अनेक प्रकार की फसलें; जैसे—गेहूँ, जौ, सरसों, चने आदि का उत्पादन किया जाता था। अधिकतर कामगार खेत में ही काम करते थे। मकानों में सभी प्रकार की सुविधाएँ मौजूद थीं।

जल संस्कृति—यहाँ पानी की निकासी के उचित प्रबंधन के कारण किसी भी रूप में बीमारी का प्रकोप अधिक नहीं हो सकता था, क्योंकि नालियाँ आदि उचित रूप में ढकी हुई थीं। घरों के भीतर से पानी या मैले की नालियाँ बाहर हौदी तक आती हैं और फिर नालियों के साथ जुड़ जाती हैं। वे नालियाँ अधिकतर बंद हैं। यहाँ पर कुओं का प्रबंध आवश्यकतानुसार उचित रूप में किया गया था।

अजायब घर—मोहन जोदड़ो में स्थित इससे संबंधित अजायब घर छोटा ही है, जैसे वह किसी कस्बाई स्कूल की इमारत हो। यहाँ पर अधिक सामान नहीं है। अहम चीजें कराची, लाहौर, दिल्ली और लंदन में ही हैं। काला पड़ गया गेहूँ, मुहरें, ताँबे और काँसे के बर्तन, चाक पर बने विशाल मृदभांड, उन पर काले भूरे चित्र, चौपड़ की गोटियाँ, ताँबे का आईना और पत्थर के औज़ार आदि के बारे में अली नवाज़ बताता है कि यहाँ पर सोने के गहने भी थे, पर वे चोरी हो गए। अजायब घर में प्रदर्शित चीजों में औज़ार तो हैं, पर हथियार कोई नहीं हैं। यहाँ कुछ सुइयों भी मिली हैं। सुइयों के अलावा हाथी दाँत और ताँबे के सुए, नर्तकी तथा दुशाला ओढ़े दाढ़ी वाले नरेश की मूर्ति भी मिली है, पर इनका प्रमाण मिलना अब मुश्किल है, क्योंकि सिंधु नदी के पानी से खुदाई के स्थान पर दलदल की समस्या उत्पन्न हो गई है, इसीलिए खुदाई को अब बंद करना पड़ा है। लेखक ओम थानवी ने इस सभ्यता के इतिहास को इतने सुंदर रूप में वर्णित किया है, जैसे—मोअनजो-दड़ो सभ्यता उसकी (लेखक की) जानी पहचानी हो।

स्मृति-अनुप्रयोग

- ▶ ऐतिहासिक नगर, सभ्यता के विकास को दिशा देने का कार्य करते हैं।
- ▶ विश्व फलक पर घटित सभ्यता की सबसे प्राचीन घटना को सुनियोजित ढंग से पुनर्जीवित किया गया है।
- ▶ सिंधु-सभ्यता के सबसे बड़े शहर मुअनजो-दड़ो की सभ्यता ताकत के बल पर शासित न होकर आपसी समझ से अनुशासित थी।
- ▶ अतीत की ऐसी ऐतिहासिक कहानियों के स्मारक चिन्हों का आधुनिक व्यवस्था के विकास अभियानों के भेंट चढ़ते जाना, अतीत के साथ अन्याय होगा जो किसी को भी कचोट सकता है।

खण्ड 'ब'

जनसंचार और सृजनात्मक लेखन

अध्याय — 7 रचनात्मक-लेखन



स्मरणीय बिंदु

जब हम अपने मित्रों, संबंधियों से किसी घटना, किसी अविस्मरणीय पल या किसी विचार आदि के बारे में चर्चा करते हैं तो उन घटनाओं, पलों, ख्यालों आदि के साथ-साथ उससे जुड़े वातावरण, दृश्यों आदि को भी अपने मस्तिष्क में रखते हैं। इन्हीं विचारों, जेहन में बसे दृश्यों, तस्वीरों और वातावरण आदि को जब हम व्यवस्थित शब्दों में पिरोकर एक लेख की शकल दे देते हैं तो वह रचनात्मक लेखन कहलाता है।

वास्तव में जिन बातों को कहना हमारे लिए मुश्किल नहीं होता उसे उसी जोश, उत्साह, भाव के साथ लिखना वाकई मुश्किल होता है, किंतु जो आत्मनिर्भर होकर लिखित रूप में अभिव्यक्ति का अभ्यास करते हैं उनके लिए अपने विचारों, घटित घटनाओं को शब्दों के द्वारा उकेर पाना मुश्किल नहीं होता, किंतु जो लोग रटने पर निर्भर रहते हैं वे स्वयं की अभिव्यक्ति के अभ्यास का अवसर खो देते हैं रटने की बुरी प्रवृत्ति के कारण उन्हें स्वयं को लिखित रूप में व्यक्त करने का अवसर ही नहीं मिलता।

मौलिक लेखन के प्रयास एवं अभ्यास को बाधित करने वाली यह निर्भरता (दी हुई पाठ्य सामग्री को रटना) हमारे अंदर लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित नहीं होने देती। इसलिए हमें उपलब्ध सामग्री के विषयों को छोड़कर (वे उदाहरण के लिए दिए गए हैं, रटने के लिए नहीं) नई तरह के अप्रत्याशित विषयों पर कलम चलाने का अभ्यास करना चाहिए। यह अभ्यास हमें मौलिक लेखन की ओर अग्रसर करेगा जिससे हमारी रचनात्मकता उभरकर नव-सृजन के रूप में प्रस्फुटित होगी।

इस प्रकार के लेखन के लिए दिए गए विषयों की संख्या असीमित हो सकती है। उनकी प्रवृत्ति भी भिन्न-भिन्न हो सकती है। उन विषयों की माँगों और दिशाएँ भी अलग-अलग हो सकती हैं। एक ही विषय पर सब का प्रस्तुतीकरण भी अलग-अलग हो सकता है। कोई स्मृतियों के गहरे सागर से मोती ढूँढ़कर लाएगा तो कोई ताज़े अनुभव से जा जुड़ेगा, कोई सैद्धांतिक दृष्टि से कलम चलाएगा तो कोई सूचनात्मक। विषय की इन माँगों के परिणामस्वरूप आप जो लिखेंगे कभी वह कोई निबंध बन पड़ेगा, कभी कोई संस्मरण, कभी रेखाचित्र तो कभी यात्रावृत्तांत। एक ही विषय पर अनेक व्यक्ति अनेक प्रकार से सोच सकते हैं।

इस रचनात्मक कौशल के अंतर्गत तैयार कोई सामग्री उपलब्ध नहीं होगी। सिर्फ नए और अप्रत्याशित (जिसकी आशा न हो) विषय दिए जाएँगे, हमें स्वयं कुछ नया सोचने, लिखने का प्रयास करना है।

यहाँ इस अध्याय के अंतर्गत प्रस्तावित सभी विषय प्रत्येक दृष्टि से खुले हुए हैं। आप उसे किसी भी दिशा की ओर मोड़कर रचनात्मक लेख लिख सकते हैं। दिए गए विषयों को पढ़कर आपके मन में जो खयाल आ रहे हैं आप उस पर मौलिक लेखन के लिए स्वतंत्र हैं। यही आपका रचनात्मक कौशल होगा। यहाँ पर मात्र उदाहरण दिए गए हैं।

स्मृति-अनुप्रयोग

पहला प्रसंग—वैचारिक और भावात्मक रूप से रचना करना और अपने मौलिक विचारों को अभिव्यक्त करना ही रचनात्मक लेखन है।

दूसरा प्रसंग—रचनात्मक लेखन में लेखक को विषय की पूरी जानकारी होती है। वह उससे सम्बन्धित तथ्यों को एकत्र करता है और अपने शब्दों में लिखता है।

तृतीय प्रसंग—विषय की रोचकता या नीरसता लेखक पर निर्भर करती है।

चतुर्थ प्रसंग—रचनात्मक कौशल के अन्तर्गत तैयार कोई सामग्री उपलब्ध नहीं होती।

अध्याय — 8 कहानी का नाट्यरूपान्तरण/रेडियो नाटक/ अप्रत्याशित विषयों पर लेखन



स्मरणीय बिंदु

कहानियों में भावबोध को अपनी भाव भंगिमा के साथ प्रस्तुत करना, उसका नाट्यरूपान्तरण है। विभिन्न प्रकार से घटना, कथा अपनी कहानी कहने या प्रस्तुत करने की शैली रूपान्तरण की जननी है। वर्तमान समय में कहानी का नाटक में, कहानी और नाटक का फ़िल्मों में रूपान्तरण एक अनूठी कला की तरह तेज़ी से हो रहा है। ध्यातव्य है कि एक विद्या से दूसरी विद्या में परिवर्तित होने पर भाषा, काल, दृश्य संवाद भी बदल जाते हैं। कहानी का नाट्यरूपान्तरण करने के लिए कहानी और नाटक की समानताओं, असमानताओं, विशेषताओं तथा उसके वैविध्य आदि को समझना आवश्यक होता है, तभी हम कहानी का नाट्यरूपान्तरण में सामंजस्य बिठा सकेंगे।

स्मृति-अनुप्रयोग

पहला प्रसंग—कहानियों में भावबोध को अपनी भाव भंगिमा के साथ प्रस्तुत करना, नाट्य रूपान्तरण है। कहानी का नाट्य रूपान्तरण करने के लिए कहानी और नाटक के वैविध्य को समझना आवश्यक होता है।

दूसरा प्रसंग—रेडियो द्वारा प्रचार, किसी सन्देश या कहानी के लिए जो नाटक लिखे जाते हैं, उन्हें रेडियो नाटक कहते हैं। यह श्रव्य होता है। इसकी संरचना, तत्त्व आदि का ज्ञान होना आवश्यक होता है। तभी रेडियो नाटक का प्रारूप व प्रसारण को सफल बना सकते हैं।

तृतीय प्रसंग—अप्रत्याशित विषय अर्थात् ऐसे विषय जिसकी कभी आपने आशा न की हो।

चतुर्थ प्रसंग—अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के समय विचारों, भावों तथा अनुभवों को संकलित कर सुन्दर एवं सुदृढ़ ढंग से अभिव्यक्त करते हैं।

पंचम प्रसंग—इससे विद्यार्थियों के भाषित कौशल व लेखन शैली में सुधार होना व ज्ञान में वृद्धि होगी।

अध्याय – 9 पत्रकारिता और जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन



स्मरणीय बिंदु

जब जन संचार किसी तकनीकी या यांत्रिक के माध्यम के ज़रिए समाज के विशाल वर्ग से संवाद करने की कोशिश की जाती है, तो उसे जनसंचार कहते हैं। इसको सूचनाओं अथवा घटित घटनाओं को विभिन्न माध्यमों के ज़रिए पाठकों-श्रोताओं और दर्शकों तक पहुँचाया जाता है। इस प्रक्रिया को सम्पन्न करने के लिए विभिन्न उपकरण होते हैं और उसके लेखन के भी अलग-अलग तरीके होते हैं। अखबार और पत्र-पत्रिकाओं में लिखने की अलग शैली होती है जबकि रेडियो, टेलीविजन आदि के लिए लिखना व प्रसारित करना एक अलग कला है। चूँकि माध्यम अलग-अलग हैं इसलिए उनकी जरूरतें भी अलग-अलग हैं इसलिए विभिन्न माध्यमों में लिखने की अलग-अलग शैलियों से परिचित होना ज़रूरी है।

स्मृति-अनुप्रयोग

जब संचार किसी तकनीकी या यांत्रिक माध्यम से ज़रिए समाज के विशाल वर्ग से संवाद करता है, जनसंचार कहलाता है। इस प्रक्रिया को सम्पन्न करने के विभिन्न उपकरण होते हैं और उनके अलग-अलग तरीके। इसलिए विभिन्न माध्यमों (अखबार, रेडियो, टेलीविजन आदि) में लिखने की

भिन्न-भिन्न शैलियों से परिचित होना ज़रूरी होता है।

इससे विद्यार्थियों के शब्द भण्डार व ज्ञान में वृद्धि होती है तथा विभिन्न माध्यमों के लेखन शैली व प्रसारण की जानकारी मिलती है।



OSWAAL BOOKS
LEARNING MADE SIMPLE